शिव आमंत्रण
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
रक्षाबंधन विशेष 2024
वर्ष:11, अंक:8, हिन्दी (मासिक), अगस्त 2024, पृष्ठ 16, मूल्य: 12:50रु.

इस रक्षाबंधन पर करें एक नया संकल्प

शिव आमंत्रण, आबू रोड। रक्षाबंधन। भाई-बहन के परम पवित्र, अटूट स्नेह-प्यार का महापर्व। रेशम की डोर से बंधा यह प्यारा बंधन भाई-बहन के निश्छल प्रेम का प्रतीक है। दुनिया में भाई-बहन का रिश्ता सबसे पवित्र और अनोखा होता है। पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है। यह पावन पर्व हमें संदेश देता है कि इंसान को सबसे ज्यादा अपने आपको व्यसन-विकारों, बुराइयों, नकारात्मक विचारों, भावनाओं से खुद की रक्षा करने की जरूरत है। आंतरिक मनोविकारों से जिसने अपनी रक्षा करना सीख लिया उसने जीवन का फलसफा सीख लिया। इंसान बाहरी ताकतों से तो लड़ लेता है लेकिन उसकी आंतरिक कमजोरी उसे शक्तिहीन बना देती है। इस दुनिया को दुख से निकालने और मनुष्यात्माओं का कल्याण करने के लिए पवित्रता के सागर, परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर दिव्य ज्ञान दे रहे हैं और सुख-शांति का रास्ता बता रहे हैं। रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करती, **शिव आमंत्रण की स्पेशल स्टोरी...**

पवित्रता का प्यारा बंधन...
रक्षाबंधन

पवित्रता का बंधन बांधने परमधाम से आए परमात्मा

नकारात्मक विचारों और भावनाओं से खुद को बचाना सबसे जरूरी

जीवन का आधार हमारे विचार और भावनाएं होती हैं। विचार जितने शक्तिशाली, उच्च, श्रेष्ठ और महान होते हैं जीवन की क्वालिटी भी उतनी ही ऊंच होती है। सफल, असफल, महान और दिव्य आत्माओं में सिर्फ विचारों का ही अंतर होता है। चारों ओर नकारात्मकता, हीन भावना से भरे माहौल के बीच खुद को इन पर हावी नहीं होने देना, बुरे विचारों से स्वयं की रक्षा कर लेना अपने आप में बड़ी उपलब्धि और महानता है। क्योंकि जब हमारे विचार कमजोर, नकारात्मक और हीन भावना से भर जाते हैं तो मन भी कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति में हमें जीवन में आने वाली छोटी-छोटी समस्याएं, परिस्थितियां भी पहाड़ समान लगने लगती हैं। यदि मन शक्तिशाली है तो पहाड़ जैसी समस्या रुई के समान लगती है। समस्याएं, परिस्थितियां और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना हैं।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम सभी संकल्प करें कि अपने विचारों को सकारात्मकता से भरपूर रखेंगे, सदा श्रेष्ठ, शुभ और प्रेरणादायी विचार ही करेंगे। सदा स्वयं उमंग-उत्साह से भरपूर रहेंगे और दूसरों को भी उमंग-उत्साह दिलाएंगे। खुश रहेंगे और खुशियां बांटेंगे। सदा दुआ लेंगे और दुआ देंगे। यदि हमने इन बातों को जीवन में शामिल कर लिया तो यकीन मानिए आपका जीवन खुशियों से गुलजार और सुख-शांति, आनंदमय बन जाएगा।

हर बहन अपने भाई से लें एक संकल्प...

आइए, इस रक्षाबंधन को हम सभी नए और अनोखे तरीके से मनाएंगे। हर बहन अपने भाई को रक्षासूत्र बांधते समय संकल्प कराएं कि मेरे भैया! जैसे आप मुझे अपनी बहन की रीति से सदा पवित्र भाव, और विचार रखते हैं, मेरी लाज, सम्मान और इज्जत की रक्षा करते हैं, वैसे ही समाज की हर बेटी को अपनी बहन की तरह पवित्र दृष्टि से देखेंगे, उसके सम्मान और इज्जत की रक्षा करेंगे। जहां कहीं भी कोई बहन-बेटी समस्या में होगी तो हर संभव मदद करेंगे। यदि हर एक बहन अपने भाई से यह संकल्प कराए तो समाज में हर बहन-बेटी निडर होकर घर की चार दीवारी से बाहर निकल सकेगी। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से परिवार, समाज, राष्ट्र और सारा विश्व एक आदर्श, सुंदर समाज बन जाएगा।

तिलक...

भारतीय संस्कृति में शुभ कार्य के शुरु करने के पूर्व तिलक किया जाता है। तिलक शुभ, विजय और आत्म स्मृति का प्रतीक है। तिलक भृकुटी के बीच किया जाता है। शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा, भृकुटी के मध्य विराजमान रहती है। वास्तव में तिलक आत्मा की ज्योति स्वरुप का प्रतीक है।

रक्षा सूत्र...

किसी भी धार्मिक कार्य में ब्राह्मण, यजमान को मंत्रोच्चार के साथ रक्षासूत्र बांधते हैं। चूंकि ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य व्रत के साथ सभी नियमों का पालन करता हो) पवित्र होते हैं इसलिए रक्षासूत्र बांधने के लिए वह योग्य हैं। इसी तरह भाई-बहन का रिश्ता भी दुनिया में सबसे पवित्र होता है, इसलिए बहनें, भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं।

उपहार या भेंट...

रक्षासूत्र बांधने पर भाई अपनी बहन को उपहार या भेंट में देते हैं, तो क्यों न इस बार रक्षाबंधन पर हर भाई अपनी बहन से संकल्प करे कि मेरी बहना आज से मैं तुम्हारी तरह हर एक बहन की लाज की रक्षा करुंगा। हर एक बहन-बेटी का मान रखूंगा। एक बहन के लिए भाई का दिया ये संकल्प और उपहार सबसे बड़ा उपहार है।

एक राखी वीर जवानों के नाम....

शरहद पर हमारे देश के वीर जवान, सैनिक भाई हमारी रक्षा के लिए ठंड, गर्मी, बारिश के बीच दिन-रात मुस्तैद रहते हैं, ताकि हम अपने घरों में त्योहार खुशी के साथ मना सकें। घर-परिवार से दूर यह सैनिक भारत मां के लाल हम वतनवासियों के लिए जान भी कुर्बान कर देते हैं। ऐसे में इस रक्षा बंधन एक राखी वीर जवानों के नाम भी सरहद पर भेजकर हम उनकी प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं।

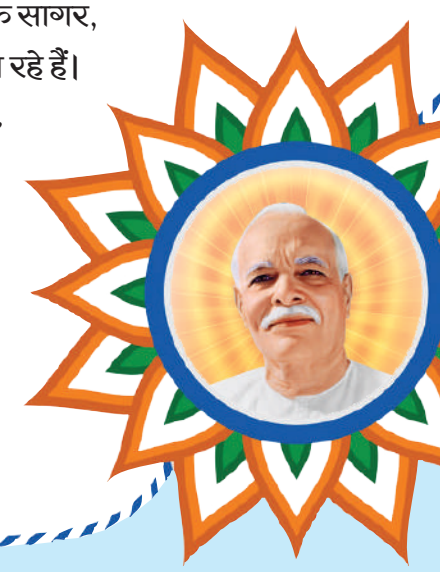

सबके प्रयासों से आएगा रामराज्य

हर किसी के मन में एक सपना रहता है कि हमारा घर-परिवार, समाज और राष्ट्र खुशहाल, संपन्न और समृद्ध हो। लेकिन रामराज्य का सपना किसी एक के प्रयास से साकार नहीं होगा, इसके लिए हम सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करना होंगे। हर एक भाई-बहन को सबसे पहले अपने मन, संकल्प, संस्कार और कर्मों में रामराज्य लाना होगा। जब हर एक की सोच और संस्कार राम जैसे हो जाएंगे तो यही दुनिया रामराज्य बन जाएगी। इस रक्षाबंधन हम संकल्प लेते हैं कि सबसे पहले अपने संकल्प और कर्मों में रामराज्य के समान दैवी संस्कारों का आह्वान करेंगे, उन्हें आत्मसात कर दूसरों के लिए प्रेरक और उदाहरणमूर्त बनेंगे। आपका हिम्मत का एक कदम अनेकों के जीवन के लिए प्रेरणामूर्त बन जाएगा। क्योंकि स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

आखिर किसे रक्षा की जरूरत है...?

रक्षा बंधन तो हम सभी हर साल मनाते हैं लेकिन सही मायने में रक्षा की जरूरत किसे है? क्या बहन से कोसों दूर बैठा भाई आपात स्थिति में उसकी रक्षा कर सकता है? क्या भाई, हर पल अपनी बहन के साथ रह सकता है? दुनिया का सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल होता है। पवित्रता की शक्ति से ही विश्व परिवर्तन और नवयुग का सृजन होता है। कुंवारी कन्या की हम दैवी का रूप मानकर पूजन करते हैं। हर शुभ कार्य में आगे करते हैं। नौ दुर्गा में कन्या पूजन का विशेष महत्व बताते हैं, लेकिन जब कन्या का विवाह हो जाता है तो वह सबके सामने शीश नवाने लगती है। विवाह के पूर्व तक कन्या को उसकी पवित्रता के कारण दैवी स्वरूप का दर्जा दिया जाता है। संत-महात्मा, ऋषि-मुनियों के सामने भी हम सभी उनकी पवित्रता के कारण ही आशीर्वाद लेते हैं। जिसने पवित्रता की रक्षा कर ली तो उसका जीवन दिव्य, महान और आचरण योग्य बन जाता है। परमात्मा का भी दिव्य संदेश है कि यह नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है मेरे बच्चों पवित्र बनो, योगी बनो।

शास्त्रों में उल्लेख है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर अंधकार-अज्ञान, पाप कर्म बढ़ जाते हैं, तब-तब नई दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजन करने के लिए परमपिता परमात्मा युगे-युगे अवतरित होते हैं। वह पवित्रता के बल से मनुष्य को पतित से पावन बनाकर नई दुनिया के योग्य बनने की शिक्षा देते हैं। रक्षाबंधन इसी पवित्रता और नई शुरुआत का प्रतीक है। ये बंधन से अपनी पवित्रता की रक्षा करने का और नई दुनिया को सृजन का महापर्व है।

नई सृष्टि के सृजन का आधार है... { 'पवित्रता'

परमात्मा पांच तरह से करते हैं हमारी रक्षा

मनुष्यों को छुड़ाते हैं माया के बंधनों से...

1. इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने का सूचक है यह पावन पर्व

यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। परमपिता शिव परमात्मा ने इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर कन्याओं-माताओं को मन-वचन-कर्म की संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया। संपूर्ण पवित्रता का व्रत धारण करने के कारण और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में शिरोधार्य करने वाले ब्रह्मा वत्स ब्राह्मण कहलाए। उन्हें ब्राह्मण पद पर आसीन किया। साथ ही ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बांधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की रक्षा करती हैं।

2. ईश्वरीय बंधन में बंधने के बाद कुछ शेष नहीं रह जाता

मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बंधन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु रक्षा बंधन को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है। बंधन दो प्रकार के होते हैं एक है ईश्वरीय बंधन और दूसरे हैं सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, परन्तु दूसरे प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बंधन में तो बंधना चाहते हैं परन्तु माया के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। जैसे आज आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म क्षीण हो जाने से संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है, वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

3. सांसारिक आपदाओं अथवा संकटों से रक्षा...

सदा के लिए दुःखों और संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा कर सकते हैं। कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती है। परमात्मा को ही संकटमोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। रकृति तो उनकी दासी है। मनुष्यों को माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता पुकार कर कहते हैं- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा। गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अतः इसका भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान ही ज्ञानवान मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है, जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

4. धर्म, पवित्रता, सतीत्व की रक्षा

दुष्टों से पवित्रता की रक्षा वास्तव में सर्व समर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए महाभारत का यह प्रसंग प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था, क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान् को ही सम्बोधित करके कहते हैं- हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो। निस्संदेह भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के चीर बढ़ाते हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं हे प्रभु, मुझे सहारा दो।

5. काल के पंजे से रक्षा

काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें कालों का काल महाकाल, महाकालेश्वर, अमरनाथ, प्राणनाथ कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की शरण में जाने की कामना करते हैं। परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा में कहा जाता है-जाखो राखे साइयां, मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पांचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बांधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है।

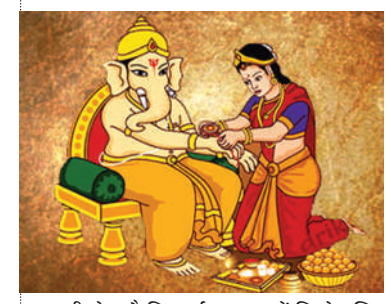

अतः 'रक्षाबंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है। बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बंधन बांधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनाएंगे। मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों द्वारा रक्षाबंधन बंधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बंधन बांधते हैं, ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से रक्षाबंधन बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रुप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रुप में मनाने से हो सकती है।

रक्षाबंधन का बंधन निभाने से मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति-

रक्षाबंधन बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाए तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसका भाव यही है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रुपा बहनों ने मनुष्यों को यह बंधन बांधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

परमात्मा कहते हैं

हे! आत्माओं.... काम महाशत्रु है

संकट की वेला में द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान उसका चीर बढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो एक द्रौपदी और एक दुर्योधन का वर्णन किया गया है। लेकिन वर्तमान स्थिति में देखा जाए तो यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगमयुग की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि 'हे आत्माओं! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है जो आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाली है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित बन गई है, जहां घर-घर में काम कटारी चलती है। काम- विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है, अब मैं इस कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएं ही जन्म ले सकेंगी।

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे, वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अतः अब मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि सारे कल्प के अपने इस अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मानकर पवित्रता के बंधन में बंधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं उन्हीं की मन-वचन-कर्म से, काम विकार से रक्षा के लिए परमात्मा शिव उन्हें रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बंधवाते हैं जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने की प्रतिज्ञा का प्रतीक है। इस प्रकार इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। वर्तमान में यह वही समय चल रहा है।

द्वापरयुग से देवी-देवता चले जाते हैं वाम मार्ग में...

पुराणों में रक्षाबंधन को लेकर यही उल्लेख है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उन्होंने इन्द्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था।

इसी प्रकार दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और उन्होंने कहा था इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएंगे। यहां प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति, कैसे होती है? यह त्योहार विष तोड़क पर्व, पुण्य प्रदायक पर्व आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देता है।

अतः यदि हम ऐसा बंधन बांधे तो निश्चय ही उपर्युक्त प्राप्ति हो सकती है। वास्तव में उपर्युक्त सभी बातों का आध्यात्मिक अर्थ है। यह अर्थ सारे कल्प की कहानी जानने से समझ में आता है। सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे देवी-देवता कहलाती थीं।

द्वापरयुग से लेकर वही देवी-देवता वाम मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन अथवा शूद्र से सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अतः जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगी और यम के दंड से भी छूट जाएंगी और मुक्ति भी प्राप्त करेंगी।

पवित्रता की राखी

सन्यासियों ने तो नारी को नर्क का द्वार कहकर अपवित्रता का सारा दोष नारी पर ही लगा दिया है। परन्तु वास्तव में नर और नारी दोनों ही पतित और विकारी बनते हैं। प्रायः नारियों की भेंट में नर ही अधिक कामी होते हैं। द्रौपदी की तरह कोई पुरुष अपनी लाज की रक्षा के लिए परमात्मा को नहीं पुकारते हैं। काम विकार के लिए प्रस्ताव भी प्रायः पुरुष ही करते हैं। कलियुग के अन्त के समय का पतित समाज भी पुरुष प्रधान होता है। अतः जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि भाइयों के पवित्र बनने से ही बहनों की लाज बच सकती है। अतः परमपिता शिव परमात्मा पुरुषों को ही रक्षाबंधन बंधवा कर उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाते हैं। इसीलिए भाइयों को बहनों द्वारा राखी बांधने की प्रथा चली आती है।

बहन-भाई का पवित्र नाता

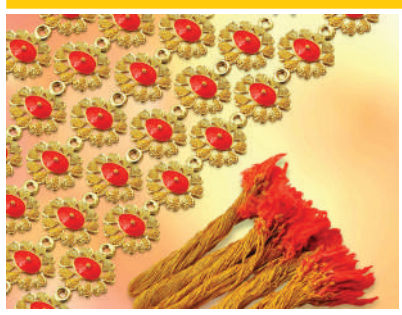

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रचकर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियां बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन बांध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्त्तव्य चलता है। ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बांधने की प्रथा भी प्रचलित है। पुराने समय में ब्राह्मण ब्रह्मचर्य सहित सभी नियमों का पालन करते थे इसलिए वह इसके योग्य थे। लेकिन वर्तमान में कुख वंशावली ब्राह्मण न तो रक्षाबंधन के महत्त्व को जानते हैं और न ही इनमें वह ईश्वरीय ज्ञान-योग बल है जिससे वह स्वयं और दूसरों को पवित्रता की धारणा करवा सकें। ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियां ही वह सच्ची बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बंधन में बांधने की अलौकिक सेवा करती हैं। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि सभी मनुष्य-आत्माएं एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन ही हैं।

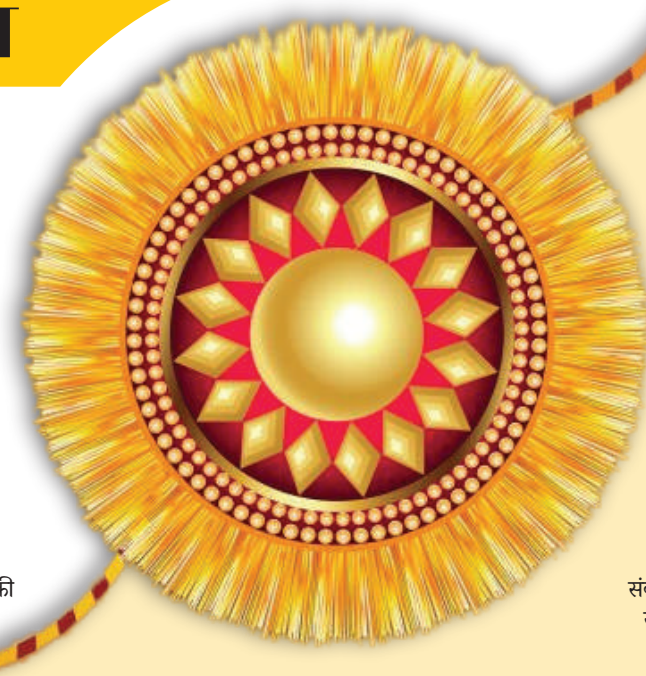

ब्रह्माकुमारीज़ की सामाजिक सेवाएं

ब्रह्माकुमारी संस्थान पिछले 87 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रुप से कार्य कर रही है। संस्थान का मूल नारा है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना। आध्यात्म ही वह शक्ति है जिसके बल से हम विश्व में शांति, सद्भाव और एकता लाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार कर सकते हैं। संस्थान योग-साधना के साथ विश्व के 140 देशों में सामाजिक सरोकार के कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहा है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में नशामुक्त भारत अभियान, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। नारी तू कल्याणी के पवित्र संकल्प के साथ समाज में बेटियों का मान बढ़ाने के लिए समय प्रति समय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, सभा, सम्मेलन और सेमीनार आयोजित किए जाते हैं।

इस राखी एक संकल्प पौधा लगाने का-

आइए, इस रक्षाबंधन पर हम एक पौधा लगाने का संकल्प लेते हैं। रक्षाबंधन पर पर्यावरण और पेड़-पौधों की रक्षा का संकल्प लेते हैं। धरती मां के लिए इससे बड़ी सौगात और कुछ नहीं हो सकती है। यदि पर्यावरण बचेगा, प्रकृति बचेगी तो हमारा भविष्य सुखद और आनंदमय रहेगा। अब वक्त आ गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आना होगा।

यह त्योहार कब और कैसे शुरू हुआ?

ऊपर जो कल्प की कहानी बताई गई है, उससे इस प्रश्न का समाधान मिल जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख द्वारा जिन नर-नारियों ने वास्तविक ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करके विकारों रूपी विष को तोड़ा था और स्वयं को पुण्यात्मा बनाया था, उन सच्चे ब्राह्मणों अथवा सच्चे ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने जन-जन को पवित्रता का प्रतीक यह रक्षाबंधन बांधा। जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सीखकर उस बंधन को निभाया, उन्होंने मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त की। अतः इस बंधन को आज तक भी मनाया जाता है और आज ब्राह्मण और बहनें यह बंधन बांधते हैं।

शख्सियत : बीके ज्योति के मोटिवेशन का कमाल, एक दर्जन से अधिक बच्चों ने जीते राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय अवार्ड

दिव्यांग बच्चों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फहराया परचम

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

मोटिवेशन दुनिया की वह शक्ति है जो इंसान को जीवन में कुछ कर गुजरने, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। दिव्यांगजन पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ हरियाणा के महासचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार ज्योति भाई के गाइडेंस और मोटिवेशन का कमाल है कि एक दर्जन से अधिक बच्चों ने एशियन गेम्स और पैरालंपिक गेम्स में परचम फहराया है। इतना ही नहीं इनमें कई बच्चों को सरकार द्वारा द्रोणाचार्य अवार्ड, अर्जुन अवार्ड, भीम अवार्ड और मेजर ध्यानचंद अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। आप दिवयंग खिलाड़ियों के मनोबल के लिए जापान, दुबई, इंडोनेशिया, मलेशिया और नेपाल आदि देशों में गए हैं। 20 साल से आप हरियाणा दिव्यांगजन पैरा स्पोर्ट्स के फाउंडर हैं। वर्तमान में आप महासचिव के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।

शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में हरियाणा के बल्लभगढ़ निवासी बीके ज्योति भाई ने अपने जीवन से जुड़े अनुछए पहलुओं पर चर्चा की। वर्तमान में आप एमएनसी जेसीबी इंडिया प्रा.लि. कंपनी में मैटेरियल डिपार्टमेंट में कार्यरत हैं। जॉब के दौरान आपको प्रेरणा मिली तो पहले एमबीए फिर एमएससी की डिग्री प्राप्त की।

दिव्यांग बच्चे प्रतिभा संपन्न होते हैं

ज्योति भाई ने बताया कि दिव्यांग बच्चे सामान्य बच्चों की तरह ही प्रतिभावान होते हैं, लेकिन कई बार कुछ बच्चों में अपनी दिव्यांगता के कारण हीनभावना आ जाती है। जब उन्हें सही गाइडेंस और मोटिवेट किया जाता है तो वह असंभव कार्य करके दिखाते हैं। मैरे स्पोर्ट्स के 20 साल के जीवन में ऐसे अनेक बच्चे मिले हैं जिन्हें मोटिवेट करके उन्होंने इंटरनेशनल लेवल पर अपनी प्रतिभा दिखाई है।

बचपन में किया संघर्ष, भाई-बहनों को खुद पढ़ाया-लिखाया

बीके ज्योति भाई ने बताया कि बचपन में ही सिर से पिता का साया उठ गया था। कड़े संघर्ष के साथ खुद की पढ़ाई जारी रखी और तीन भाई-बहनों को भी पढ़ाया-लिखाया। जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए लेकिन कभी खुद को कमजोर नहीं होने दिया। मैंने संकल्प कर लिया था कि जीवन मिला है तो कुछ करके दिखाना है।

बिना सर्जरी के ठीक हो गया हैड क्रेक

मैं पिछले 32 साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। वर्ष 1999 में बॉलीवाल खेलते हुए फेसियल पैरालाइस हो गया। बहुत इलाज किया लेकिन उतना फायदा नहीं हुआ। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान का कमाल है कि कभी खुद को कमजोर नहीं पड़ने दिया। मैंने बीमारी पर राजयोग मेडिटेशन का प्रयोग किया और इससे उबर आया। इसके बाद वर्ष 2001 में सड़क हादसे में फोर हैड क्रेक हो गया। डॉक्टर ने सर्जरी की सलाह दी, लेकिन एक दिन सुबह ब्रह्ममुहूर्त में परमपिता शिव बाबा का ध्यान करते हुए प्रेरणा मिली कि बच्चों तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं। सब ठीक हो जाएगा। इसके बाद मैंने सर्जरी करने का फैसला टाल दिया। प्यारे शिव बाबा और राजयोग का कमाल है कि मात्र छह महीने के अंदर बिना सर्जरी के ही हैड क्रेक ठीक हो गया।

मेमोरी पावर इतनी कि 2800 नंबर मौखिक याद हैं

बीके ज्योति भाई ने बताया कि राजयोग ध्यान से एकाग्रता और याददाश्त इतनी बढ़ गई है कि आज जेसीबी मशीन में लगने वाले 2800 पार्टस के नंबर मौखिक याद हैं। यह देखकर मेरे कंपनी के सहकर्मी दंग रह जाते हैं। यह सब शिव बाबा का कमाल है कि मुझे इस काबिल बनाया है। इसके अलावा समय-प्रति समय जिला कारागार में जाकर बंदियों को व्यसनमुक्ति, तनावमुक्ति के लिए क्लास लेते हैं। उन्हें अपराधमुक्त जीवनशैली जीने के लिए प्रेरित करते हैं। कई बंदी जेल से छूटकर राजयोग मेडिटेशन सीखने के लिए भी उत्साह दिखाते हैं। इन सबका असर है कि कईयों को जीवन में जीने की नई राह मिली है।

पंजाबी सेवा समिति से जुड़कर दस साल से कर रहे सेवा

बीके ज्योति भाई बल्लभगढ़ पंजाबी सेवा समिति में पिछले दस साल से महासचिव के रुप में सेवाएं दे रहे हैं। समिति के माध्यम से विशाल रक्तदान शिविर, नशामुक्ति शिविर, स्वास्थ्य शिविर आदि सामाजिक सेवाएं की जाती हैं। सामाजिक उत्थान में मेरी सेवाओं को देखते हुए वर्ष 2019 में केंद्रीय मंत्री ने फरीदाबाद पंजाबी जिला रत्न पुरस्कार से पुरस्कृत किया था। हमारा प्रयास रहता है कि जितना हो सके समाज के कल्याण के लिए कुछ कर सकूं।

परमात्म ज्ञान बदल देता है जीवन

राजयोग मेडिटेशन हमारी विचार शक्ति को सकारात्मक बनाकर जीवन को सकारात्मक प्रेरणा से भरपूर कर देता है। अमृतवेला ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे दिनचर्या शुरु हो जाती है। रोज मुरली क्लास और राजयोग ध्यान करना दिनचर्या में शामिल है। घर में ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला चल रही है। जीवन का एक ही उद्देश्य है- करते चलो सबका भला, जीवन के जीने की ये है कला।

शिव बाबा का चमत्कार

कार चार पलटी खाकर चकनाचूर हुई, परिवार को चोट तक नहीं आई

- कोलकाता की बरनाली घोष के जीवन की चमत्कारिक कहानी
- राजयोग मेडिटेशन से बेटे की मानसिक स्थिति में आया सुधार

शिव आमंत्रण, आबू रोड

मैं, पति और मेरा बेटा कार से एक समारोह में भाग लेने जा रहे थे। इस दौरान गाड़ी में शिव बाबा के गीत चल रहे थे और मैं बाबा को याद कर रही थीं। अचानक सड़क पर एक गड्ढा आया और गाड़ी सड़क के नीचे जाकर गिरी और चार पलटी खाकर चकनाचूर हो गई। सड़क से गुजर रहे लोग यह नजारा देखकर चीखने-चिल्लाने लगे और बचाने के लिए दौड़े। लेकिन प्यारे परमपिता शिव बाबा का कमाल है कि हम तीनों में से किसी को भी घरोंच तक नहीं आई। यह देखकर मौके पर मौजूद भीड़ दंग रह गई कि इतनी बड़ी दुर्घटना होने के बाद भी कोई घायल नहीं हुआ। यह सब शिव बाबा का कमाल है कि उनकी याद और साथ से पहाड़ जैसी समस्या रुई के समान बन गई।

यह कहना है पश्चिम बंगाल, कोलकाता निवासी बरनाली घोष का। आप पिछले पांच साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हैं। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से आपके जीवन में कई चमत्कारिक परिवर्तन सामने आए हैं। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में आपने बताया कि पहले मेरा बेटा कुछ खाता नहीं था। बहुत गुस्सा करता था। घर का सामान उठाकर फेंक देता था। लेकिन मैंने परमात्मा की याद में भोजन बनाकर उसे राजयोग के माध्यम से शुभ बाइब्रेशन देना शुरू किए तो धीरे-धीरे बदलाव आना शुरू हो गया। अब उसका गुस्सा पूरी तरह से शांत हो गया है। उसकी मानसिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। यह सब मेडिटेशन से ही संभव हो सका।

मेरा गुस्सा भी शांत हो गया...

बरनाली घोष ने बताया कि पहले मुझे बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। छोटी सी बात में तनाव हो जाता था। लेकिन जब से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर राजयोग मेडिटेशन करना शुरू किया है तब से मेरा गुस्सा शांत हो गया है। अब जीवन में खुशियां ही खुशियां आ गईं हैं। घर में माहौल आनंदमय बन गया है। रोज ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग ध्यान करती हूं और मुरली क्लास जाती हूं।

राजयोग में है जादुई शक्ति...

मेरे जीवन का अनुभव है कि राजयोग मेडिटेशन में वह जादुई शक्ति है जिसमें जीवन से जुड़ी तमाम समस्याओं और परेशानियों का समाधान समाया हुआ है। दरअसल राजयोग मेडिटेशन से हमारा मन शांत हो जाता है, हम वर्तमान में जीना सीख जाते हैं। इससे भूत और भविष्य की चिंता खत्म हो जाती है। कर्मफल और ड्रामा के ज्ञान से तनाव से मुक्त रहते हैं। माउंट आबू आकर ऐसा लगा जैसे स्वर्ग में आ गए हैं। बार-बार प्यारे शिव बाबा का दिल से शुक्रिया अदा करती हूं कि मेरे जीवन को इतना आनंदमय बना दिया।

माउंट आबू में अखिल भारतीय किसान सम्मेलन आयोजित

आंतरिक प्रकृति को बदलने के लिए हमें योग की स्थिति में आना होगा

शिव आमंत्रण, माउंट आबू, राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर परिसर में अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से कृषि विशेषज्ञ, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपित, प्रोफेसर और किसानों ने भाग लिया। भारतीय कृषि दर्शन एवं संपूर्ण ग्राम विकास विषय पर आयोजित सम्मेलन में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि अपनी आंतरिक प्रकृति को बदलने के लिए हमें योग की स्थिति में आना होगा। परमपिता परमात्मा से योग युक्त होकर हमें अपने अंदर ईश्वर की सारी शक्तियों को धारण करना पड़ेगा। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी सुदेश दीदी ने कहा कि प्रकृति और संस्कृति अनादि है। हम आत्माएं भी अनादि और शाश्वत हैं। श्रेष्ठ कर्मों की खेती करने से संसार और समाज श्रेष्ठ बना रहता है।

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इंफाल के कुलपति डॉक्टर अनुपम मिश्रा ने कहा कहा कि मनुष्य मात्र के जीवन में जब तक आध्यात्मिकता का प्रादुर्भाव नहीं होगा, हम उन्हें शिक्षित नहीं कह सकेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाएं हमें उपयुक्त रीति से जीवन जीना अर्थात जीवन शैली सिखलाती हैं।

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. अजीत कुमार ने कहा कि अब हमें एक बार फिर से भारतीय कृषि संस्कृति को अपनाना होगा। स्वयं को ईश्वर के साथ योग अवस्था में लाकर, परमपिता परमात्मा की दिव्यता श्रेष्ठता और मूल्यों को धारण करना होगा। प्रकृति के साथ संपूर्ण सामंजस्य बनाकर, रसायनों के प्रयोग के बिना गौ माता का आशीर्वाद लेकर कृषि का संचालन करेंगे तो एक बार फिर से देश रामराज्य की तरफ बढ़ेगा।

कृषि निदेशालय लखनऊ से पधारे हुए डिप्टी डायरेक्टर डॉ. बद्री विशाल तिवारी ने बताया कि प्रकृति से पूरा प्रेम गहरा प्रेम स्थापित किए बिना हम आज ग्राम विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। हमारी कृषि कालांतर से ही दर्शनशास्त्र से संबंधित रही थी। आज फिर से हमें यौगिक खेती को अपनाना होगा। ईश्वर से योग युक्त होकर आत्म बल की वृद्धि करके हम प्रकृति का संरक्षण करेंगे।

कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी सरला दीदी ने कहा कि यौगिक खेती की आप सभी ने यहां जो बारीकियां और विधि सीखी है उसे अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जाकर प्रैक्टिकल में करें। यौगिक खेती के लिए मात्र इतना करना है कि अपना योग सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा से लगाकर उनकी शक्तियां लेनी है। प्रकृति के हर जीव के प्रति प्रेम और सहयोग करना है। उपाध्यक्ष बीके राजू भाई, मुख्यालय संयोजक बीके सुमंत ने भी विचार व्यक्त किए। नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके तृप्ति बहन ने संचालन किया।

नेशनल मीडिया ट्रेनिंग में भारत सहित नेपाल से 400 से अधिक प्रशिक्षु पत्रकारों ने लिया भाग

मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता को बढ़ावा देने आगे आए युवा

समाचार लेखन से लेकर न्यूज एंकरिंग, लाइव रिपोर्टिंग की बारीकियां सीखीं

आबू रोड, राजस्थान।

मूल्यनिष्ठ और आध्यात्मिक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मधुबन न्यूज चैनल ने सकारात्मक पहल शुरू की है। इसके लिए युवा ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को बाकायदा पत्रकारिता की बारीकियां सिखाईं जा रही हैं। शांतिवन मुख्यालय के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में मीडिया एवं पीआर ऑफिस, मधुबन न्यूज द्वारा आयोजित चार दिवसीय नेशनल मीडिया ट्रेनिंग में भारत सहित नेपाल से 400 से अधिक प्रशिक्षु पत्रकारों ने भाग लिया। देश के अलग-अलग हिस्सों से पहुंचे जाने-माने वरिष्ठ पत्रकारों ने समाचार लेखन से लेकर न्यूज एंकरिंग, लाइव रिपोर्टिंग के गुर सिखाए। समापन पर सभी प्रशिक्षु पत्रकारों को सर्टिफिकेट और आईडी प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विज्ञापन का जादू पुस्तक का विमोचन

ट्रेनिंग के शुभारंभ पर मप्र सागर से आए इंक मीडिया इंस्टीट्यूट के निदेशक, मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. आशीष द्विवेदी द्वारा लिखी गई पुस्तक विज्ञापन का जादू का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इस दौरान डॉ. द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े युवा पत्रकारिता में रुचि ले रहे हैं, इसकी बारीकियां सीक रहे हैं यह बहुत ही खुशी की बात है। हमारे छोटे-छोटे प्रयास एक दिन समाज में बड़ा बदलाव लाते हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान है। बहुत छोटे से स्तर पर हुई शुरुआत आज इतने विशाल रूप में विश्वभर में सेवाएं दे रहा है। यहां का मैनेजमेंट काबिलेतारीफ है। इस दौरान सागर से आए डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि के डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. संजीव सराफ भी मौजूद रहे।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार

- अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि समाचार द्वारा समाज का कल्याण हो। न्यूज़ का अर्थ है नई चीज। मैं पदमापदम सौभाग्यशाली हूं इस स्वमान में रहकर कार्य करना है।
- कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि खुशी बांटने का तरीका सत्यता है। हमें स्वमान में रहकर सारे विश्व को ज्ञान देना है। आपने एक किस्सा सुनाते हुए कहा कि एक बार एक संपादक ने कहा था कि आपके यहां तीन पेज की मुरली पढ़कर लोग खुश हो जाते हैं और दूसरी तरह समाज में लोग पूरा अखबार पढ़कर भी इतने खुश नहीं होते हैं।
- मल्टी मीडिया निदेशक करुणा भाई ने कहा कि पत्रकारों को लिखने की कला चाहिए। हम क्या लिख रहे हैं, कैसे लिख रहे हैं यह बहुत जरुरी है। आज सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का ज्ञान होना जरुरी है। हमें मूल्यनिष्ठ मीडिया को बढ़ावा देना है।
- प्रयागराज की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके मनोरमा दीदी ने कहा कि मीडिया को गंभीरता और दिव्यता का बैलेंस रखना होगा। दिव्यता को समाज तक पहुंचाना होगा।
- बीके डॉ. सविता दीदी ने कहा कि मीडिया के एम का मतलब मैसेज देना। ई मतलब एजुकेट करना। डी मतलब डेवलेपमेंट, पहले हमारा स्वयं का विकास। आई मतलब इंसत्पायर करना और ए मतलब अवेयर करना है। इन सबका अपने जीवन में प्रयोग करें।
- नेशनल मीडिया को-ऑर्डिनेटर बीके शांतनु भाई ने कहा कि मीडिया का काम है हर दिशा की खबर समाज में पहुंचाना। सत्यता के आधार पर न्यूज़ बनाना है। हम ऐसी न्यूज़ लिखें जो सदाचार पत्र बन जाए और आकाशवाणी अमृतवाणी बन जाए। दूरदर्शन दिव्य दर्शन बन जाए। ऐसी पत्रकारिता से ही समाज में बदलाव आएगा।
- पीआरओ व मधुबन न्यूज़ के निदेशक बीके कोमल भाई ने कहा कि एक अच्छे पत्रकार की हमेशा तीसरी आंख खुली रहती है। वह हमेशा सतर्क, जागरुक, अपडेट रहता है। इसलिए आप सभी भविष्य के भावी पत्रकार हो तो अभी से अपने जीवन में चीजों को देखने, समझने का नजरिया बदल दें।
- ओम शांति मीडिया के संपादक बीके गंगाधर भाई ने कहा कि खुद को बिंदू समझकर ज्योतिर्बिंदू शिव बाबा की निरंतर याद में रहना हैं।
- भोपाल की बीके डॉ. रीना दीदी ने संचालन किया। सामाजिक सेवाओं को मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना जरुरी है ताकि अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिल सके।
- शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेंद्र ने कहा कि पत्रकारिता एक जुनून है। अपने अंदर हमेशा कुछ करने का जज्बा बनाए रखें। रोज नया पढ़े और सीखें। खबर लिखते समय रोचकता, रचनात्मकता और सरलता का ध्यान रखें।
- भोपाल के बीके रावेंद्र ने सोशल मीडिया के बारे में विस्तार से जरुरी सावधानी बताईं ।
- बिलासपुर के बीके कमल छाबड़ा ने कहा कि ट्रेनिंग में जो सीखा है उसका अभ्यास करेंगे तभी इसकी सार्थकता रहेगी।

नोएडा से आए आज तक के एक्जीक्यूटिव एडिटर (इनपुट) रमेश तिवारी ने इंटरव्यू के दौरान बरती जाने वाली सावधानी और टेक्निक के बारे में बताया। साथ ही वन टू वन, टॉक शो और स्पेशल शो को कैसे आर्गनाइज करें आदि बातों पर गहराई से प्रकाश डाला। साथ ही अपने पत्रकारिता के अनुभव से सभी को प्रैक्टिकल में डेमो के माध्यम से समझाया। आपने कहा कि किसी बड़ी शख्सियत का इंटरव्यू करने के पहले उसके बारे में पहले से पता कर लें। उनके जीवन की उपलब्धियां, विशेषताएं आदि के बारे में जानकारी होना जरूरी है।

जयपुर से आए न्यू इंडियन एक्सप्रेस के वरिष्ठ सहायक संपादक राजेश असनानी ने कहा कि जितना आप प्रैक्टिस, अभ्यास करेंगे उतना आगे बढ़ेंगे। एक मीडिया पर्सन का दायित्व होता है कि अपने कार्य को जिम्मेदारी के साथ करना। आज समाज में पॉजिटिव मीडिया की जरूरत है। एक पत्रकार का हथियार उसका आत्मविश्वास होता है। पूरे आत्मविश्वास, सच्चाई, निष्पक्षता के साथ पत्रकारिता करें, तभी आप अपने साथ और समाज के साथ न्याय कर पाएंगे। जब रिपोर्टिंग करें तो पूरे उत्साह और आत्म विश्वास के साथ करें।

नोएडा से आए न्यूज-18 राजस्थान के आउटपुट एडिटर देवेंद्र शर्मा ने कहा कि आप सभी ने यहां चार दिन में जो सीखा, समझा और जाना है उसका अभ्यास घर जाकर भी करते रहें। यह तो एक शुरुआत है, इसे आगे भी बनाए रखना है। रोज कुछ न कुछ नया सीखें। एक अच्छा पत्रकार वही होता है जिसमें सीखने की लगन, कुछ करने का जज्बा और जुनून होता है। आपने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शब्दावली और रिपोर्टिंग के बारे में गहराई से बताया। साथ ही प्रशिक्षु पत्रकारों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया।

नोएडा से आईं भारत एक्सप्रेस की सीनियर एंकर कोमल शर्मा ने कहा कि खबर लिखते समय हमेशा ध्यान रखें कि उसके तथ्यों में सच्चाई हो, खबर का प्रस्तुतिकरण स्पष्ट, सरल और आकर्षक हो। इलेक्ट्रानिक मीडिया की रिपोर्टिंग में आपके शब्द, भाव, बॉडी लैग्वेंज का बहुत महत्व होता है। समय, परिस्थिति और घटना के हिसाब से हमारे बोलने का लहजा हो। आपने प्रैक्टिकल में प्रशिक्षु पत्रकारों को एंकरिंग, लाइव रिपोर्टिंग, फोनो के बारे में डेमो देकर समझाया। साथ ही समाचार लेखन की बारीकियां बताईं।

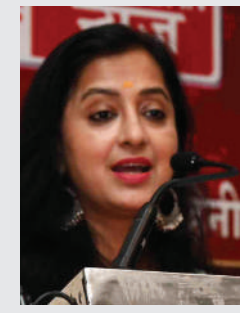

रायपुर से आईं भारत एक्सप्रेस की स्टेट एडिटर प्रियंका कौशल ने कहा कि सामाजिक बदलाव लाने में मीडिया की बड़ी भूमिका है। सोशल मीडिया के जमाने में आज हर व्यक्ति पत्रकार बन गया है। सभी को अपने विचार व्यक्त करने की आजादी है। यदि पत्रकारिता में सफल होना है और लेखन पर पकड़ बनानी है तो इसके लिए सबसे जरूरी है पढ़ना और लिखना। रोज कम से कम एक घंटा जरूरी पढ़ें और रोज अपनी डायरी में विचारों को लिखें। एक अच्छे पत्रकार की दिनचर्या में पढ़ना और लिखना शामिल होना चाहिए।

संपादकीय

आत्मा की स्वतंत्रता ही वास्तव में सच्ची आजादी

15 अगस्त को हमारा देश इस वर्ष 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक वीर-वीरांगनाओं ने अपनी कुर्बानी दी जिसे हम भूल नहीं सकते। हमें उस गुलामी से तो मुक्ति मिल गई लेकिन हम सबके मन के अंदर अनेक व्यसन, बुराई, विकार रूपी अंग्रेज घुसकर मन को गुलाम बना कमजोर करते जा रहे हैं। हमारे देश की जनसंख्या की 37% युवा जो कोई ना कोई बुराई, विकारों से ग्रसित होता जा रहा है। 140 करोड़ की जनसंख्या वाला यह देश युवाओं के स्वर्णिम भविष्य पर निर्भर करता है। आज जो युवा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष व्यसन, बुराई से आजाद होने के लिए जब तक राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास निरंतर नहीं करेंगे तब तक इन व्यसन बुराइयों से आजादी नहीं मिल सकती। इसलिए राजयोग द्वारा अपने विकारों पर जीत पाकर मन जीते जग जीत बनकर आत्मा को सच्ची आजादी देने के लिए परमात्मा की याद में अपने को शरीर के जगह आत्मा महसूस करें। तभी आत्मा सच्ची आजादी पा सकती है। तभी हमारा समाज, देश दुनिया अपराधों, बीमारियों दुखों से मुक्त होकर स्वर्णिम युग की तरफ अग्रसर होगा। भारत विश्व गुरु बनकर पूरे विश्व पर राज करेगा। इसलिए आत्मा की स्वतंत्रता ही हमारी सच्ची आजादी है। मन की आजादी के लिए एकमात्र जरिया अध्यात्म ही है। अध्यात्म में ही मन की सभी समस्याओं का समाधान समाया हुआ है।

बोध कथा/जीवन की सीख

साधना से ही होगा आत्मदर्शन

प्रातः काल का समय था। गुरुकुल में हर दिन की तरह गुरुजी अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे। आज का विषय था- 'आत्मा' गुरुजी ने गीता का यह श्लोक बोला - **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।**
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। अर्थात् आत्मा को न शस्त्र छेद सकते हैं, न अग्नि जला सकती है, न जल गला सकता है, न हवा सुखा सकती है, वह अविनाशी है। यह सुनकर एक शिष्य बोला- गुरुवर यह कैसे संभव है? यदि आत्मा का अस्तित्व है, वो अविनाशी है, तो भला वो

इस नाशवान शरीर में कैसे वास करती है और वो हमें दिखाई क्यों नहीं देती? क्या सचमुच आत्मा होती है? गुरु जी मुस्कुराए और बोले- पुत्र आज तुम रसोईघर से एक कटोरा दूध लेना और कल इसी समय लेकर आना। अगले दिन शिष्य कटोरा लेकर जाता है तो गुरुजी ने पूछा- क्या दूध पीने योग्य है? शिष्य बोला- नहीं गुरुजी, यह तो कल रात ही फट गया था। आज तुम एक कटोरा दही रसोईघर से लेना और कल इसी समय लेकर आना। अगले दिन शिष्य सही समय पर पहुंचता है। गुरुजी ने पूछा- क्या दही आज भी उपभोग के लिए ठीक है? शिष्य बोला जी हां ये ठीक है। गुरुजी बोले- अच्छा कल फिर इसे लेकर आना। अगले दिन जब गुरुजी ने दही के बारे में पूछा तो उसमें खटास आ चुकी थी और कुछ खराब लग रहा है। इसके बाद गुरुजी ने कहा आज तुम रसोई से एक कटोरा घी लेकर जाना और उसे तब लेकर आना जब वो खराब हो जाए। दिन बीतते गए पर घी खराब नहीं हुआ और शिष्य रोज खाली हाथ ही गुरु के समक्ष उपस्थित होता रहा। एक दिन शिष्य से रहा नहीं गया और गुरुवर से कहा बहुत दिन पहले मैंने आपसे प्रश्न किया था कि इसका उत्तर देने की बजाए आपने मुझे दूध, दही, घी में उलझा दिया। क्या आपके पास इसका उत्तर नहीं है? इस बार गुरुजी गंभीर होते हुए बोले- वत्स, मैं ये सब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने के लिए ही कर रहा था। देखो- दूध, दही और घी सब दूध का ही हिस्सा हैं, लेकिन दूध एक दिन में खराब हो जाता है, दही दो-तीन दिन में लेकिन शुद्ध घी कभी खराब नहीं होता। आत्मा इस नाशवान शरीर में होते हुए भी ऐसी है कि उसे कभी नष्ट नहीं किया जा सकता। पर गुरुजी हमें घी दिखाई देता है पर आत्मा नहीं दिखती? गुरुजी-घी अपने आप ही तो नहीं दिखता न? पहले दूध को दही में बदलना पड़ता है, फिर दही को मथकर मक्खन में बदला जाता है, फिर मक्खन को गर्म किया जाता है तब जाकर घी बनता है।

सीख: गुरुजी बोले- हर इंसान आत्मा का दर्शन यानी आत्म-दर्शन कर सकता है। साधना-तपस्या की आंच पर तपाना होता है। तब जाकर आत्म-दर्शन संभव हो पाता है। यह सुनकर शिष्य की जिज्ञासा शांत हो गई।

मेरी कलम से

सूर्य भाई (36)
मास्टर डिग्री, सिंगर, कंपोजर, काठमांडू, नेपाल

किडनी की बीमारी से डिप्रेशन में डूबा, राजयोग ध्यान से फिर लौटी मुस्कान

काठमांडू के सिंगर-कंपोजर का परिवर्तनकारी अनुभव

वर्ष 2022 में किडनी ने काम करना बंद कर दिया था। अनेक डॉक्टर्स को दिखाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। बीमारी से परेशान होकर मैं डिप्रेशन में आ गया था। लगातार स्वास्थ्य खराब होता जा रहा था। डॉक्टर्स ने जवाब दे दिया था कि कुछ ही दिन के मेहमान हो, दिन-रात तनाव में रहने से चेहरा मुरझा गया था। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद मेरी जिंदगी में फिर से बहार आ गई। मैं नियमित राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने लगा। जब वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी दीदियों ने मेरी काउंसलिंग की और कर्मफल, कर्म सिद्धांत, ड्रामा, सृष्टि का ज्ञान समझाया तो धीरे-धीरे मेरा तनाव दूर होता चला गया। मैं अपना ध्यान आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान पर केंद्रित करने लगा। कुछ ही माह के अंदर मेरे जीवन में फिर से खुशियां आ गईं। आज बीमारी जरूर है लेकिन दर्द, दुख का एहसास नहीं होता है। चेहरा फिर से खिल गया है। अब मुझे कोई पश्चाताप नहीं होता है।
राजयोग के ज्ञान से मेरे जीवन में फिर से खुशियां आ गईं हैं। मेरा जीवन खिल गया है। इसके साथ ही अब पहले से ज्यादा मेंटली स्ट्रांग हो गया है।

सत्य ज्ञान होने से अब महसूस करता हूं कि शरीर बीमार है लेकिन आत्मा थोड़े ही बीमार होती है। मुझे नया जीवन देने में आदरणीय बीके राज दीदी, बीके किरण दीदी का स्नेह-प्यार और मार्गदर्शन रहा। अब रोज ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे दिनचर्या शुरू हो जाती है।
मैं अपने जीवन के अनुभव से यही संदेश देना चाहता हूं कि राजयोग मेडिटेशन का ज्ञान यथार्थ में हमें जीवन जीने की कला सिखा देता है। हम वर्तमान में जीना सीख जाते हैं। तनाव छूमंतर हो जाता है। जीवन में बहार आ जाती है।
एक बार अवश्य इस ज्ञान को जीवन में समझने का प्रयास करें। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे यह सत्य ज्ञान समझने और जीवन में उतारने का परम सौभाग्य मिला है। परमपिता परमात्मा जिन्हें हम सदियों से पुकार रहे थे उनका अवतरण हो चुका है। जन्मोंजन्म का भाग्य बनाने का यह सुनहरा मौका है। माउंट आबू आकर ऐसा लगा कि वर्षों से बिछड़े अपने पिता के घर आया हूं। यहां सभी अपने लोग हैं। प्यारे शिव बाबा ने मुझे नया जीवन देकर मेरे जीवन को संवार दिया है। दिल अब यही गीत गाता है धन्यवाद तेरा, प्रभु धन्यवाद तेरा....।

अव्यक्त स्वरूप में आध्यात्मिक विराटता द्वारा आत्मिक उच्चता

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 73

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जगत के समस्त प्राणी मात्र से अपनत्व की आत्मीय बोधगम्यता का परिणाम ही जीवन में परहित के विशाल स्वरुप का समागम है जिसमें दातापन के स्वभावगत मूल्यपरक सिद्धांत का सदुपयोग व्यावहारिक रूप में सहजता से होने लगता है। सृष्टि में परोपकारी प्रवृति की प्रासंगिकता से ओतप्रोत मानवीय चिंतन की पराकाष्ठा द्वारा सम्पूर्ण जगत के प्रति समभाव का विश्लेष्णात्मक अध्ययन और उससे जुड़े निष्कर्ष सम्पूर्ण मानवता के मंगलकारी स्वरुप के लिए सदा ही प्रयासरत रहते हैं। योग से आत्मिक संबंधों की गहन अनुभूति सदा ही सत्कर्म की प्रेरणा प्रदान करती है, जिसमें साधक द्वारा कर्मातीत अवस्था की प्रायोगिक भूमिका में आत्म दर्शन द्वारा अध्यात्म पुरुषार्थ से सम्बद्ध होकर सम्पूर्ण कर्म, जीवन मुक्ति के सन्दर्भ एवं प्रसंग में सम्पादित किया जाता है। सेवा की उच्चता से परहित की संकल्पना का यथार्थवाद जीवन दर्शन के प्रांगण में क्रियान्वित हो जाने से अंतर्मन का परोपकारी भाव एवं विचार जगत आत्मिक संतुष्टता की आधारभूत स्थिति से जीवन को पूर्णतः निर्संकल्प, निर्विकल्प स्वरुप में स्थापित कर देता है।

परहित विराटता से जगत कल्याण: आत्म चिंतन की सूक्ष्म दृष्टि का विहंगम परिदृश्य सर्व आत्माओं के कल्याणकारी स्वरुप में अंतर्निहित होता है, जहां सेवा परोपकार की विराटता समस्त जीवात्मा के प्रति मुक्ति और जीवन मुक्ति की उच्चता को मनुष्य जन्म में प्राप्त कर लेने की शुभ भावना के साथ मदद हेतु तत्पर रहती है। परहित का व्यावहारिक परिवेश जीवन की सम्पूर्ण दुर्लभता और उससे सम्बद्ध स्थितियों की प्राप्ति को सहजता में परिवर्तित कर देता है, क्योंकि

मानव से महामानव बन जाने के विभिन्न संकल्प एवं विकल्प मानवीय चित्त की पवित्रता से गतिशील होते हुए देवात्मा के स्वरुप में स्थापित हो जाते हैं। जगत के समस्त प्राणी मात्र से अपनत्व की आत्मीय बोधगम्यता का परिणाम ही जीवन में परहित के विशाल स्वरुप का समागम है जिसमें दातापन के स्वभावगत मूल्यपरक सिद्धांत का सदुपयोग सहजता से होने लगता है।

सम्पूर्ण मानवता का मंगलकारी स्वरूप: मानवता की पक्षधरता सदैव परहित के सानिध्य में विचरण करती है जिसके अंतर्गत मनुष्य, मनुष्यता एवं संवेदनशीलता को बनाए और बचाए रखने के लिए मानव सेवा की परोपकारी भावना का क्रियान्वयन जगत कल्याण के परिदृश्य में अनिवार्य होता है। सृष्टि में परोपकारी प्रवृति की प्रासंगिकता से ओतप्रोत मानवीय चिंतन की पराकाष्ठा द्वारा सम्पूर्ण जगत के प्रति समभाव का विश्लेष्णात्मक अध्ययन और उससे जुड़े निष्कर्ष सम्पूर्ण मानवता के मंगलकारी स्वरुप हेतु सदा ही प्रयासरत रहते हैं। जीवन में दातापन का यह भावनात्मक पक्ष धीरे-धीरे वैचारिक धरातल पर स्थापित हो जाता है जो व्यवहारिकता के स्वरूप में श्रेष्ठतम मानवीय वृति, शुभ प्रवृत्ति एवं पवित्र मनोवृति द्वारा पूर्णतया सकारात्मक स्वरूप से सार्थकता के परिवेश में रूपांतरित होता है जिसकी परिणीति सर्व मानव आत्माओं के कल्याण और विकास अर्थात उत्थान और उत्सर्ग में गतिशील होते हुए नव सृजन के प्रति आस्थावान होकर निरंतर आत्मजगत के निहितार्थ संबद्ध हो जाती है ।

जीवन की उज्ज्वलता का जीवंत प्रमाण: ज्ञान की आत्मिक बोधगम्यता स्वयं को आत्मानुभूति की महानता से उपराम स्थिति का अनुगमन करके मुक्त जीवन के सर्वांगीण विकास में धर्म-कर्म को व्यवहारगत आचरण में ढालकर कार्यक्षेत्र में श्रेष्ठतम को संपन्न करने की पूर्णता सत्य दर्शन की उच्चता का सुखद परिणाम है। योग से आत्मिक संबंधों की गहन अनुभूति सत्कर्म की प्रेरणा प्रदान करती है, जिसमें साधक द्वारा कर्मातीत अवस्था की प्रायोगिक भूमिका में आत्म दर्शन के द्वारा अध्यात्म पुरुषार्थ से सम्बद्ध होकर सम्पूर्ण कर्म, जीवनमुक्ति के सन्दर्भ एवं प्रसंग में सम्पादित किया जाता है।

सेवा अस्माकं धर्मः का नैसर्गिक सुखांत

सेवा की उच्चता से परहित की संकल्पना का यथार्थवाद जीवन दर्शन के प्रांगण में क्रियान्वित हो जाने से अंतर्मन का परोपकारी भाव एवं विचार जगत आत्मिक संतुष्टता की आधारभूत स्थिति से जीवन को पूर्णतया, निर्संकल्प , निर्विकल्प स्वरुप में स्थापित कर देता है । जीवात्मा जब अंतःकरण की पवित्रता द्वारा सेवा परोपकार को क्रियान्वित करती है तब प्रार्थना के स्वरुप में अंतर्मन की शुद्धता से सृष्टि की पवित्रतम अवस्था तथा सर्व मानव आत्माओं को पावन बनाने की शुभ भावना ही सदा उत्पन्न होती रहती है जिसमें सेवा अस्माकं धर्मः का नैसर्गिक सुखांत जीवन के व्यवहार दर्शन से प्रतिपादित हो जाता है। आत्मजगत द्वारा परमात्मा से सर्व संबंधों की गहन अनुभूतियां का स्वरूप , जीवात्मा की सक्षमता के पक्ष को आत्मीयता के एकरस स्वरूप की परिष्कृत अवस्था से संपन्न कर देता है जो निश्चित ही आत्मिक उच्चता के संदर्भित प्रसंग को अव्यक्त स्वरूप में आध्यात्मिक विराटता द्वारा सदा ही सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ प्रतिबिंबित करता रहता है ।

हम अपने विचारों से ही अच्छी तरह ढलते हैं, हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं,मन पवित्र होता है तो खुशी परछाई की तरह साथ चलती है।

- गौतम बुद्ध, संस्थापक बौद्ध धर्म

ब्रह्मचर्य उत्तम तपस्या, नियम, ज्ञान, दर्शन, चरित्र, संयम और विनय की जड़ है। तपस्या में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ तपस्या है।

- महावीर स्वामी, संस्थापक जैन धर्म

माउंट आबू में अखिल भारतीय सुरक्षा सेवा प्रभाग का सम्मेलन आयोजित

सच्चा सशक्तिकरण है आत्मिक सशक्तिकरण

शिव आमंत्रण, माउंट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर परिसर में आत्म सशक्तिकरण द्वारा प्रेरक व्यक्तित्व का निर्माण विषय पर अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में सैन्यकर्मियों, अर्धसैनिक बलों और उच्च पदाधिकारियों ने भाग लिया।

संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई ने कहा कि सच्चा सशक्तिकरण है आत्मिक सशक्तिकरण। स्वयं को आत्मा के रूप में अनुभव करते हुए आत्मा का प्रकाश का संपर्क परमपिता परमात्मा से करके स्वयं के अंदर ईश्वरीय शक्तियों को भरना आत्मिक सक्तिकरण है।

भारतीय नौसेना से सेवानिवृत वाईस एडमिरल सतीश घोरमड़े ने कहा कि 2006 से ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में हूं और नियमित रूप से यहां की शिक्षाओं को ग्रहण करता हूं। जीवन में सच्ची सुख-शांति और आनंद पाने के लिए यहां की शिक्षाएं बहुत अधिक कारगर हैं। विकारों पर विजय प्राप्त करना आसान नहीं है, मगर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षाओं से आत्म अनुशासन प्राप्त करके विकारों पर भी विजय पाई जा सकती है। यह शिक्षा न सिर्फ हमें बाहरी सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि आंतरिक सुरक्षा भी प्रदान करती है। इस संस्थान में हर कर्मियों द्वारा उनका कार्य सेल्फ मोटिवेशन के आधार पर चलता रहता है। मन शांत रहने से हर कार्य शांतिपूर्वक चलता रहता है.

लेफ्टिनेंट जनरल विनोद खंडारे ने कहा कि मैं भी 2005 से ही ईश्वरीय शिक्षाओं को आत्मसात करता चला आ रहा हूं। इस स्थान पर आने में उन्हें देर हुई। उन्हें काफी पहले ही यहां आना चाहिए था। मगर आज पहली बार यहां सम्मेलन में शिरकत कर रहे हैं। संस्थान द्वारा एक बहुत ही शक्तिशाली शिक्षा दी गई है। वह है कि इस ब्रह्मांड में होने वाली सारी घटनाएं पूर्व निश्चित हैं और अपने-अपने समय पर वह घटनाएं रिपीट होती रहती हैं। हम सभी को संसार के इस सफर में मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना है और अन्य सभी को भी अपने साथ लेकर चलना है। इन ईश्वरीय शिक्षाओं से यह संभव है। यह शिक्षा हमारा सर्वांगीण विकास करती है। ज्ञान सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी प्रभा दीदी ने कहा कि ओम शांति एक महामंत्र है। इस मंत्र का जाप करने से अर्थात आत्मा अनुभूति करते रहने से हम सारी समस्याओं से छूट जाते हैं और आत्मा का सशक्तिकरण होता है तथा हमारा व्यक्तित्व आकर्षक और प्रेरक बन जाता है।

सीजीडीए भारत सरकार से देविका रघुवंशी ने कहा कि मैं 5 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर रही हूं। राजयोग का अभ्यास कर रही हूं। ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के पूर्व मेरा व्यक्तित्व कठोर प्रकार का था। मगर अब मैं शांतिपूर्वक अपना पूरा कार्य करती हूं और मेरे सहकर्मी इन बातों को महसूस करते हैं। ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सिखाया गया राजयोग इतना सहज है कि हर स्थिति में खाते पीते चलते फिरते और अपना कार्य करते हुए भी परमपिता परमात्मा से हम मानसिक तल पर जुड़ जाते हैं और उनकी शक्तियां प्राप्त करते रहते हैं। मुंबई की बीके दीपा बहन ने राजयोग ध्यान का अभ्यास कराया। रिटायर कर्नल बीके सती, कैप्टन शिव सिंह ने भी अपने अनुभव सांझा किए।

ब्रह्मांड के सबसे बड़े कलाकार हैं परमपिता परमात्मा

माउंट आबू में कला एवं संस्कृति प्रभाग का अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, माउंट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर परिसर में प्रेम शांति और सद्भाव विषय पर अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों सेबड़ी संख्या में कलाकारों, शिल्पकारों तथा कला और शिल्प से जुड़े हुए सिने जगत के अदाकारों ने भाग लिया।

हरियाणा से पधारे माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष ईश्वर सिंह ने कहा कि सम्मेलन में आकर बहुत आनंदित हूं, प्रसन्न हूं। मैं मानता हूं कि संसार का सबसे बड़ा कलाकार ईश्वर ही है। हम माटी के पुतले तो बनाते हैं मगर उसमें प्राण नहीं डाल पाते हैं। मगर परमात्मा ने हम माटी के पुतलों में प्राण फूंक कर हमें सजीव और सक्रिय बना दिया है। हम संसार को बेहतर बनाने के लिए अपना प्रयत्न करते रहते हैं। प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चंद्रिका दीदी ने कहा कि हम भारतवासियों की संस्कृति है प्रेम शांति और सद्भावना।

बॉलीवुड के सिंटा के सचिव हेमंत पांडे ने कहा कि अपने अंदर हिम्मत पैदा करो, धारा के विपरीत चलो, संघर्ष करो और सफलता के शिखर पर जा पहुंचो या फिर इतने सहज बन जाओ की हर रुकावट तुम्हारा सहयोग करें और तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लो। अपने अंदर आत्म बल पैदा करके अपने विरोधियों को भी क्षमा करो और उसकी भलाई के लिए प्रार्थना करो। परमपिता परमात्मा ने ही हमें इस स्थान पर आने का अवसर दिया है।

बॉलीवुड के प्रख्यात लेखक एवं निर्देशक सूरज तिवारी ने कहा कि आपकी जिंदगी में अचानक से कोई एक ऐसा पल आ सकता है जो आपके जीवन की दिशा को पूरी तरह सकारात्मकता की ओर पलट देता है। हम सभी के जीवन में वह पल आ गया है, जब हम यहां आए हुए हैं। हमें यहां ईश्वर द्वारा दी गई शिक्षाओं को अच्छी तरह प्राप्त करके उन शिक्षाओं को जीवन में धारण करना है।

टेलीविजन की प्रख्यात एक्ट्रेस नीलू कोहली ने कहा कि ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अंदर आत्म ज्योति जल गई है। अद्भुत खुशी और आनंद की अनुभूति हो रही है। कुछ दिनों पहले मैं हताशा और निराशा के गर्त में समाई हुई थी, तभी ब्रह्माकुमारी के संपर्क में आने का मौका मिला। मैं सम्मेलन में एक स्टूडेंट बनकर आई हूं। बॉलीवुड की एक्ट्रेस अंजली अरोरा ने कहा कि सिंटा के 25 से भी अधिक सदस्य आए हुए हैं। यहां से जब आप लौटकर जाएंगे तो आपका व्यक्तित्व खिल चुका होगा। प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी दयाल भाई ने स्वागत भाषण दिया। भावनगर की बीके तृप्ति बहन ने राजयोग की अनुभूति करवाई। राष्ट्रीय संयोजक बीके सतीश भाई, करनाल की प्रेम दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

परमात्मा ने नारी शक्ति को स्वर्ग के द्वार खोलने के लिए निमित्त बनाया

माउंट आबू में राष्ट्रीय महिला महासम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, माउंट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर परिसर में महिला प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय महिला महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली से पधारीं भारत सरकार की राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग की उपाध्यक्षा अंजना पवार ने कहा कि पुरुष भी पिता या पति के रूप में स्त्री को आगे बढ़ाने में मददगार बन सकता है। कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चन्द्रिका दीदी ने कहा कि मन के विचारों को सकारात्मक एवं श्रेष्ठ बनाना आवश्यक है, जिससे हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। आध्यात्मिकता द्वारा ही यह संभव है। मुझे सदा स्मृति में रखना है कि मैं इस यूनिवर्स का महत्वपूर्ण हिस्सा हूं। मुझे जीवन में उदारता, धैर्यता, पवित्रता, प्रेम, शक्ति आदि गुणों को धारण करना है, जिसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके ब्रजमोहन भाई ने कहा कि परमात्मा ने नारी शक्ति को स्वर्ग के द्वार खोलने के लिए निमित्त बनाया है। आध्यात्मिक सशक्तिरण से नारी को सशक्त बनाकर पूरे विश्व में लाखों आत्माओं के संस्कारों को परिवर्तित किया है तथा अनेक कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा अंधविश्वास से मुक्ति दिलाई है।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी चक्रधारी दीदी ने नारी के अंदर समाहित गुणों को स्वरूप में लाकर परिवार, समाज तथा विश्व की सेवा करने का लक्ष्य दिया। आध्यात्मिक सशक्तिरण के द्वारा होने वाले आंतरिक परिवर्तन से स्वयं, परिवार एवं समाज का स्थाई परिवर्तन होता है। नांदेड़ से पधारीं उपायुक्त अरूणा सांगेवार ने कहा कि नारी जन्मदात्री है, प्रकृति की संरक्षक है। उसे लड़कियों के साथ लड़कों को भी श्रेष्ठ संस्कार देने हैं जिसमें वह सर्व को सम्मान देना सीखें। यहां से आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग के अभ्यास को कर्मक्षेत्र में व्यावहारिक जीवन में स्वयं तथा अन्य को लाने की प्रेरणा ले जा रहीं हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी सुदेश दीदी ने भी संबोधित किया। क्षेत्रीय संयोजिका बीके माला दीदी ने राजयोग की अनुभूति कराई। मधुर वाणी ग्रुप द्वारा स्वागत गीत, कुमारी दिया, जया तथा कृष ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सविता दीदी ने संचालन किया।

विश्वभर में एक करोड़ लोगों को दिया योग का संदेश

■ ब्रह्माकुमारीज़ के देश-विदेश के सेवाकेंद्रों पर धूमधाम से मनाया गया अंतरराष्ट्रीय योग दिव
लोगों ने लिया भाग, तन-मन को स्वस्थ रखने के बताए टिप्स ■ स्वयं और समाज के लिए यो

आबू रोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विश्वभर में एक करोड़ लोगों को योग, राजयोग का संदेश दिया गया। संस्थान के विश्व के 140 देशों में स्थित नौ हजार सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्रों, पाठशालाओं में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहीं मुख्यालय शांतिवन के मनमोहिनीवन और डायमंड हाल में आयोजित कार्यक्रम में दस हजार लोगों ने भाग लिया। देश की राजधानी दिल्ली में रेड फोर्ट और रायपुर में आयोजित विशाल योग कार्यक्रम में सात हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। देश के अन्य मेगा शहरों में आयोजित मुख्य कार्यक्रमों में पांच हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। वरिष्ठ योग प्रशिक्षक बीके बाबू भाई ने योग के विभिन्न आसन का अभ्यास कराया। मुख्य अतिथि रेवदर-आबू रोड विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि जब भी मैं ब्रह्माकुमारीज़ के किसी कार्यक्रम में आता हूं तो नई सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता हूं। यहां के सकारात्मक वातावरण से बहुत शांति मिलती है। मुझे ऐसा लगता है कि यहां के हर कार्यक्रम में आना चाहिए और कुछ नया सीखना चाहिए। लोगों को बताना चाहिए कि बाबा ने हमें क्या-क्या सिखाया है। आज पूरे भारत में लोग योग दिवस मना रहे हैं। इस मौके पर कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई, मल्टीमीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, जयपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी, बीके मोहन सिंघल भाई, डॉ. बनारसी लाल सहित हजारों लोग मौजूद रहे।

दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ के दिल्ली जोन द्वारा रेड फोर्ट पर विशाल योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों सहित सात हजार से अधिक बीके भाई-बहनों ने भाग लिया। इस मौके पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शुक्ला दीदी, बीके चक्रधारी दीदी सहित बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजयोग मेडिटेशन कराया। इस दौरान मंच पर एक साथ सैकड़ों ब्रह्माकुमारी बहनों ने बैठकर सामूहिक राजयोग का अभ्यास किया।

मुंबई। गामदेवी और कोलाबा सबजोन द्वारा साउथ मुंबई के मरीन ड्राइव पर विशाल योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें फिल्म जगत के अभिनेता जैकी श्राफ ने भाग लिया। मरीन ड्राइव पर फ्लाईओवर के ब्यूटीफिकेशन के उद्घाटन पर पहुंचे मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से बीके बहनों ने मुलाकात कर स्मृति चिह्न प्रदान किया। इस मौके पर बीके नेहा दीदी व अन्य बहनें मौजूद रहीं।

जयपुर। बनिपार्क सेवाकेंद्र द्वारा सीआरपीएफ-राजस्थान सेक्टर-245 बटालियन में 500 प्रशिक्षणकर्ताओं को योगासन कराया। साथ ही ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में विस्तार से बताते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई। इस मौके पर आईजी अखिलेश प्रसाद सिंह, बीके कुणाल, बीके पल्लवी, बीके पराग, बीके पूर्वी आदि मौजूद रहे।

इंदौर। ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय द्वारा एसजीएसआईटीएस के मैदान पर भव्य योग समागम आयोजित किया गया। इसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। योगाचार्य डॉ. ममता गार्गव ने योगासन, प्राणायाम कराया। क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी, बीके अनीता दीदी, बीके ऊषा दीदी, बीके शकुंतला दीदी ने राजयोग के बारे में बताया। इस मौके पर संभाग आयुक्त दीपक सिंह, अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी मीर रंजन नेगी, आईएमए के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र पाटीदार, जिला आयुष विभाग से पधारे डॉ. शीतल कुमार सोलंकी, एसजीएसआईटीएस निदेशक राकेश सक्सेना ने भी संबोधित किया।

रायपुर। योग दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर द्वारा सात दिवसीय मेगा योग महोत्सव मनाया गया। शुभारंभ पर गृह सचिव के महानिदेशक अरूण देव गौतम, जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी, संयुक्त जिलाधीश एवं उप मुख्य कार्यपालन अधिकारी (स्वास्थ्य संचालनालय) विनय अग्रवाल, संचालिका बीके सविता दीदी, योग प्रशिक्षक छबिराम साहू, बीके अदिति दीदी ने संबोधित किया।

स ■ हर वर्ग, धर्म, संप्रदाय के ोग विषय पर हुआ आयोजन

फैक्ट

9000 सेवाकेंद्र, उपसेवाकेंद्रों पर मनाया गया योग दिवस

01 करोड़ लोगों ने लिया भाग

10000 लोगों ने मुख्यालय के कार्यक्रम में लिया भाग

140 देशों में दिया योग का संदेश

7000 लोगों ने दिल्ली के रेड फोर्ट में आयोजित कार्यक्रम में लिया भाग

गयाना। कैरेबियन, एंटीगुआ और बारबुडा में भारत के महावाणिज्य दूतावास द्वारा अमेरिकन मेडिकल यूनिवर्सिटी कॉन्फ्रेंस हॉल में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें बीके पायल दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। इस दौरान राजदूत और स्थायी सचिव क्लेरेंस ई. पिलग्रिम, मंत्री चार्ल्स हेनरी फर्नांडीज, बारबुडा हवाई अड्डा प्राधिकरण के अध्यक्ष और निदेशक मंडल रोल्स्टन ई. पॉटर, एंटीगुआ सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

मंगोलिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हमने सच्चा नेतृत्व विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके इन्ना किम ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई। इस मौके पर संयुक्त राष्ट्र के तपन मिश्रा ने राजयोग केंद्र का दौरा किया और ध्यान में भाग लिया।

कीव, यूक्रेन। देश में मुश्किल हालात के बावजूद यूक्रेन में भारतीय दूतावास ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। कार्यक्रम में दूतावास के अधिकारी, भारतीय छात्र, प्रवासी भारतीयों के प्रतिनिधि, हठ योग केंद्रों के प्रशिक्षक और छात्र, आर्ट ऑफ लिविंग के सदस्य और कीव सेंटर की बीके नीना दीदी और संगम रिट्रीट सेंटर के ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े भाई-बहनों ने भाग लिया। भारत के यूक्रेन में राजदूत हर्ष कुमार जैन और सचिव सतेंद्र कुमार यादव सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

नैरोबी, केन्या। ब्रह्माकुमारीज़ रिट्रीट कॉम्प्लेक्स में प्यूयर ऑफ़ पॉवर रिट्रीट सेंटर में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें नौ देशों से आए लोगों ने भाग लिया। इसमें भारत से पहुंची प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने सभा को संबोधित किया।

रांची, झारखंड। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला दीदी, बीके प्रदीप, इंजीनियर दीपक भाई, वरिष्ठ प्रबंधक अमरजीत सिंह, मानव संसाधन विकास विभाग के अधिकारी संजय गुप्ता सहित बड़ी संख्या में बीके भाई-बहनों ने भाग लिया।

भिलाई, छग। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेक्टर 2 स्थित राजेश पटेल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाल योग उत्सव आयोजित किया गया। भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने योग शक्ति के प्रयोग द्वारा स्वयं के जीवन से बीती बातों को भूलकर जीवन में नए संस्कार धारण की प्रेरणा दी। सांसद विजय बघेल, बीके आशा दीदी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में हजारों लोगों ने भाग लिया।

बिलासपुर,छग। जिला प्रशासन एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा बीआर यादव स्मृति खेल परिसर क इंडोर स्टेडियम में विशाल सामूहिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका संचालन ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने किया। इस मौके पर केन्द्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, बेलतरा क्षेत्र के विधायक सुशान्त शुक्ला सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। मंजू दीदी ने सभी को राजयोग के माध्यम से गहन शांति की अनुभूति कराई।

भरतपुर। अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। आगरा सबजोन की सह प्रभारी बीके कविता दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का दैनिक जीवन में महत्व बताते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई। इसमें जिला एवं सेशन न्यायाधीश केशव कौशिक, आयुर्वेद विभाग के अतिरिक्त निदेशक हरवीर सिंह, संभागीय समन्वयक डॉ. चंद्रप्रकाश दीक्षित, बीके बबीता दीदी, बीके पूनम दीदी, बीके प्रवीणा दीदी, बीके गीता दीदी, बीके योगिता दीदी, बीके जुगल किशोर सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रपति ने भुवनेश्वर, हरिदमदा गांव में बने दिव्य रिट्रीट सेंटर का किया उद्घाटन

हमारे दैनिक जीवन में छोटे-छोटे बदलाव समाज में बड़े बदलावों का मार्ग प्रशस्त करते हैं: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

शिव आमंत्रण, भुवनेश्वर/ओडिशा

भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भुवनेश्वर के निकट हरिदमदा गांव में ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य रिट्रीट सेंटर की नींव रखी। साथ ही राष्ट्रीय अभियान लाइफस्टाइल फॉर सस्टेनेबिलिटी का भी शुभारंभ किया। इस दौरान राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि प्रकृति में बहुत कुछ है। जंगल, पहाड़, नदियां, झीलें, समुद्र, वर्षा, हवा - ये सभी जीवधारियों के जीवन के लिए आवश्यक हैं। लेकिन मनुष्य को यह याद रखना चाहिए कि प्रकृति में प्रचुरता उसकी जरूरतों के लिए है, उसके लालच के लिए नहीं। मनुष्य अपने भोग-विलास के लिए प्रकृति का दोहन कर रहा है और ऐसा करके प्रकृति के प्रकोप का शिकार हो रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना और प्रकृति के अनुकूल जीवन जीना समय की मांग है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली पर जोर दिया है। हमारे दर्शन में धरती को माता और आकाश को पिता कहा गया है। नदी को भी माता की उपाधि दी गई है। जल को जीवन कहा गया है। हम वर्षा को इंद्र और समुद्र को वरुण देवता के रूप में पूजते हैं। हमारी कहानियों में पहाड़ और पेड़ हिलते हैं और जानवर आपस में बातें भी करते हैं। इसका मतलब यह है कि प्रकृति जड़ नहीं है, उसके भीतर भी चेतना की शक्ति है। ये सभी प्रकृति के संरक्षण के लिए भारतीय दार्शनिकों के सुंदर विचार हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और मौसम की अनिश्चितता आज दुनिया के सामने बड़ी चुनौतियां हैं। बाढ़, भूस्खलन, हिमस्खलन, भूकंप, जंगल की आग और सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएं अब कभी-कभार होने वाली नहीं रह गई हैं। अब ये लगातार होने वाली घटनाएं बन गई हैं। हमारे दैनिक जीवन में छोटे-छोटे बदलाव समाज में बड़े बदलावों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हमें अपनी आदतों में बदलाव लाना होगा, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम उपयोग हो। कई बार नल खुले रहने से पीने का पानी बर्बाद हो जाता है। दिन में भी लाइट जलती रहती है। इसी तरह घर हो या दफ्तर, हम पंखे या लाइट बंद करने पर ध्यान नहीं देते हैं। हम प्लेट में खाना छोड़ देने की आदत से खुद को मुक्त नहीं कर पाए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली पर सिर्फ चर्चा करना ही काफी नहीं है, हमें इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना होगा। उन्होंने सभी से प्राकृतिक संसाधनों को बचाने की आदत डालने का आग्रह किया।

राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय अभियान लाइफस्टाइल फॉर सस्टेनेबिलिटी से जुड़े सभी लोगों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह लोगों को प्रकृति से जोड़ने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। यह अभियान बैठकों, समितियों या सम्मेलनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्होंने अभियान के तहत खासकर ग्रामीण लोगों को पर्यावरण के बारे में जागरूक करने का आग्रह किया।

गीता ज्ञान प्रवचनमाला आयोजित: आत्म ज्ञान के द्वारा ही स्वधर्म में टिक सकते हैं

श्रीमद्भगवत गीता ही ऐसा शास्त्र है, जिसमें भगवानुवाच लिखा है

शिव आमंत्रण, लुधियाना/पंजाब

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा सर्व समस्याओं का समाधान गीता ज्ञान विषय पर प्रवचनमाला आयोजित की गई। इसमें राजयोगिनी बीके लक्ष्मी दीदी ने कहा कि गीता ज्ञान को सही परिप्रेक्ष में समझने की जरूरत है। जिस समय परमात्मा ने गीता सुनाई, उसके बहुत समय पश्चात गीता को धर्मग्रंथ का रूप दिया गया। गीता शास्त्र वास्तव में भगवान द्वारा सुनाए गए ज्ञान का यादगार है। बहुत समय के बाद लिखे जाने के कारण गीता ज्ञान का भाव परिवर्तन हो गया।

उन्होंने कहा कि गीता का ज्ञान निराकार परमात्मा शिव ने कलियुग के अंत में दिया। क्योंकि गीता ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हुई। श्रीमद्भगवत गीता ही ऐसा शास्त्र है, जिसमें भगवानुवाच लिखा है। उन्होंने कहा कि गीता में परमात्म अवतरण की जो विधि बताई है, वो वास्तव में आलौकिक और विचित्र है। पवित्रता के आधार से ही नए विश्व की संकल्पना की जा सकती है। परमात्मा ही आत्मा को पवित्र बनने की शक्ति प्रदान करते हैं। हरेक को जीवन में सुख-शांति और पवित्रता चाहिए। जोकि परमात्म श्रीमत के सिवाए मिल नहीं सकती है।

उन्होंने कहा कि गीता हमें यही संदेश देती है कि आत्मा स्वयं ही अपना मित्र और अपना शत्रु है। फिर कोई दूसरा हमारा शत्रु कैसे हो सकता है। हमें स्वधर्म को समझने की जरूरत है। आत्म ज्ञान के द्वारा ही स्वधर्म में टिक सकते हैं। आपने राजयोग मेडिटेशन द्वारा सभी को परमानंद की अनुभूति कराई। राशि अग्रवाल ब्रह्माकुमारीज़ का आभार व्यक्त किया। रंजोध सिंह द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के सार का पंजाबी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन किया गया है। बीके सरस्वती दीदी ने अतिथियों का सम्मान किया।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा का नई दिल्ली में संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. मृत्युंजय भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, डॉ. बनारसी भाई एवं बीके शिविका बहन ने शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। केंद्रीय रेल एवं सूचना प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव का ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात कर सम्मान किया। साथ ही दौलतपुर साबरमती ट्रेन में अतिरिक्त कोच लगाने पर रेल मंत्री का आभार व्यक्त किया। साथ ही अन्य रेल सेवा बढ़ाना के लिए पत्र सौंपा।

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी भाई ने नशा मुक्ति अभियान की वार्षिक रिपोर्ट प्रदान की। वहीं वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई ने सम्मान किया। कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया। इस पर केंद्रीय मंत्री ने सेवाओं की सराहना की।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। उड़ीसा के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री मोहन चारण माझी ब्रह्माकुमारीज़ बसंत विहार दिल्ली की प्रभारी बीके क्षीरा दीदी ने मुलाकात कर परमात्मा का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं की जानकारी दी। साथ में बीके विकास भाई मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, धमधा (दुर्ग छत्तीसगढ़)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा अलविदा तनाव शिविर आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर नगर पंचायत अध्यक्ष सुनीता गुप्ता, उपाध्यक्ष अशोक कसार, व्यापारी खेमचंद जैन, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष राजीव गुप्ता, दुर्ग सेवाकेंद्र संचालिका बीके रीता दीदी, बीके रूपाली दीदी ने किया। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और गहराई से राजयोग व जीवन प्रबंधन के बारे में जाना।

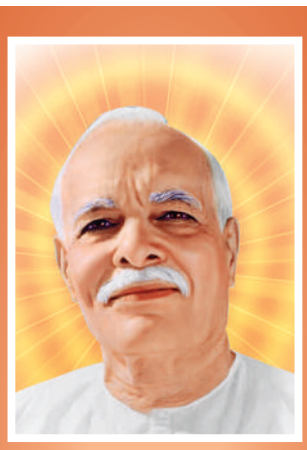

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

अपने कपड़े स्वयं धोती हैं, खाना भी अपने हाथों से बनाती हैं और किसी से सेवा लेकर कर्मों का बोझ नहीं चढ़ातीं।

रियल लाइफ

भगवान तेरे घर का शृंगार जा रहा है...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जब मधुबन, पांडव भवन से ब्रह्मा वत्स विदाई लेते तो सभी के नेत्रों से प्यार की बूंदें टपक पड़तीं। जाते-जाते वे पीछे निहारते रहते। बाबा और मम्मा. टाटा कहते रहते, रूमाल हिला-हिलाकर सभी को विदा देते। कई बार तो वे यज्ञ-भवन के गेट तक जाकर छोड़ आते। फिर सारा रास्ता जिज्ञासुओं को शिव बाबा की और यज्ञ-वत्सों को याद आती रहती। वे मन-ही-मन में सोचते कि पता नहीं हम वहां से वापस क्यों चले आए? अब उनका स्नेह बाप-दादा से और यज्ञ-माता से जुट जाता और उन्हें बाबा जो शिक्षा देते, उसी स्नेह में वे उसे धारण करते और जीवन को उच्च बनाने तथा दूसरों की भी ईश्वरीय सेवा करने में तत्पर हो जाते। इस प्रकार, जिज्ञासुओं का आबू में आना-जाना लगा रहता। नये-नये सेवाकेन्द्र भी खुलते जाते और ईश्वरीय सेवा-कार्य विस्तार को प्राप्त होता जाता। अब कई सम्मेलनों के आयोजकों से भी ब्रह्माकुमारी बहनों को भाषणों के लिए निमन्त्रण मिलने लगे थे। सन् 1953 में अमृतसर से भी एक प्रसिद्ध सन्यासी निर्मल स्वामी जी के यहां से एक वेदान्त सम्मेलन में के लिए निमन्त्रण मिला। उसमें ब्रह्माकुमारी जानकी जी और रुक्मिणी जी का जाना हुआ था। उस सम्मेलन के बारे में ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी जी ने लिखा है - 'निर्मल स्वामी जी ने वेदान्त सम्मेलन का जो आयोजन किया था, उसमें सम्मिलित होने के लिए हम देहली से गई थीं। उन्हें यह पहले से ही बता दिया गया था कि हम किस गाड़ी में आएंगी। अतः वहां से कुछ शिष्ट व्यक्ति स्टेशन पर स्वागत के लिए आए थे। चूंकि अन्य सभी सन्यासी और साधु अपने-अपने स्थानों से फर्स्ट क्लास में ही आए थे। अतः सम्मेलन के आयोजकों ने सोचा था कि हम भी फर्स्ट क्लास में ही होंगी। इसलिए वे हमें फर्स्ट क्लास के डिब्बे में देखने आए थे। परन्तु हम तो सदा तीसरे दर्जे के डिब्बे में ही यात्रा करती थीं। अतः हमें जब आयोजकों की ओर से आया हुआ कोई व्यक्ति न दिखाई दिया तो हम अपने डिब्बे से उतर कर गेट के निकट पहुंचीं तो इतने में स्वागत समिति के लोग आए और बोले कि हम तो आपको फर्स्ट क्लास के डिब्बे में देखने गए थे। वे हमें सम्मेलन के स्थान की ओर ले गए। अन्य संन्यासियों के लिए तो उन्होंने वहां टेंट लगाए थे। हम माताओं-कन्याओं के लिए एक मकान में स्थान लिया था जोकि नया-नया बना था। हमने जब स्थान ग्रहण किया तो वे हमारे लिए कॉफी, दूध, देसी घी तथा कच्ची सब्जी का भरा हुआ एक थाल ले आए। हमने थोड़ा-सा दूध और थोड़ी-सी सब्जी रख ली और बाकी सबकुछ उन्हें लौटा दिया।

इस बात का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा क्योंकि अन्य साधु-सन्यासी तो उनसे खूब माल लेते थे। निर्मल स्वामी जी भी हमारे पास आए और उन्होंने दो माताओं को हमारे यहां आवश्यक कार्यों के लिए रख दिया। वे माताएं हमें कहतीं - लाओ हम आपके कपड़े धो दें, आपका खाना बना दें। परन्तु हम उनसे कहतीं कि हम अपने कपड़े स्वयं ही धोती हैं, खाना भी अपने हाथों से बनाती हैं और हम किसी से सेवा लेकर अपने ऊपर कर्मों का बोझ नहीं चढ़ातीं। ये जो हमारे नियम थे, इनसे वे बहुत प्रभावित हुईं। वे बोलीं- संन्यासी तो अपने वस्त्र भी हम लोगों से धुलाते हैं। आपका कमाल है कि आप सारा कार्य स्वयं करती हैं। आप अपने बर्तन भी स्वयं साफ करती हैं। सम्मेलन में मंच बहुत बड़ा बना था और उस पर काफी साधु-सन्यासी बैठे होते थे। उस पर एक ओर हम दोनों बहनें बैठी होतीं थीं। जनता का हम दोनों की ओर रोजाना ध्यान जाता था कि प्रवक्ताओं में मंच पर ये दोनों देवियां कौन हैं और इनका भाषण कब होगा? आख़िर एक दिन ब्रह्माकुमारी जानकी जी का भाषण हुआ। उनके भाषण से पहले अन्य साधु-सन्यासियों के जो भाषण हुए थे, उन सभी में शंकराचार्य जी का अद्वैत सिद्धांत प्रतिपादित किया गया था। एक ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है। इस पर ही विभिन्न प्रवक्ता बोले थे परन्तु जानकी बहन जी ने आत्मा और परमात्मा का अन्तर बताया था।

...क्रमशः **अगले अंक में जानेंगे उन्होंने क्या कहा।**

प्रेरणापुंज

अपने को इच्छा से मुक्त करना माना जीवनमुक्त रहना है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्राह्मणों को कोई इच्छा नहीं, कामना नहीं। फ्री है स्वच्छ साफ हैं। चाहिए क्या, पैसा भी बहुत कम खर्चते हैं। जो चाहिए वह भगवान की तरफ से मिलता है। यह शरीर सेवा अर्थ है। तो अपने को इच्छा से मुक्त करना माना जीवनमुक्त रहना। जीवन में है पर मुक्त, खुश, बहुत हल्के हैं। न चमड़ी से प्यार है न दमड़ी से प्यार है। दोनों धोखेबाज हैं। न रूप न रूपया, हमको क्या चाहिए, कुछ नहीं चाहिए। बाबा मिला सबकुछ मिला। न्यारे हैं प्यारे है। ज्ञान सूर्य की सकाश लो तो अन्दर खारा-पन निकल जायेगा औरों को समझाने में जितना टाइम देते हैं, मन से मुख से औरों को समझाते हैं फिर अपने मन को अपने लिए बैठकर समझायें- तू शिवबाबा को यादकर तो पहाड़ जैसी बात भी राई हो जायेगी।

राजयोगिनी दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

> आत्म-अभिमानी स्थिति से बाबा की याद में इतनी ताकत मिल जाती है, जो बाबा कराये वह करूं। बुद्धियोग लगाने से टचिंग आ जाती है यह करना है।

सारे दिन में मुख से या मन से हम औरों को कितना समझाते और अपने को कितना समझाते? अपने लिए तो मुख चलाना नहीं है, अपने लिए अन्तर्मुखी बनना होगा। मुख से बोलों या कानों से सुने या आँखों से देखें तो अपने मन को नहीं समझा सकेंगे। जब देखते सुनते हैं तो मुख से औरों को समझाते हैं। पहले मन में समझाना शुरू करते हैं फिर टाइम आता है तो मुख से समझाते हैं। तो सारा दिन क्या करते हैं? अपने को समझाते हैं या औरों को? आत्मा का ज्ञान मिला है - परमात्मा को याद करने का। किसी देहधारी को याद किया माना देह को याद किया। बाबा ने इतनी समझ दी है कि हे आत्मा, तू परमात्मा को याद कर। आत्मा और परमात्मा का रूप क्या है, फिर उसके बीच संबंध क्या है, वह भी पता चला है। दोनों का रूप एक जैसा है लेकिन अन्तर कितना बड़ा है। परम आत्मा एक है और उसके साथ आत्मा के सर्व सम्बन्ध है। यह समझ होने से मात-पिता, सतगुरू की सैक्रीन है वह जैसे मास्टर सर्वशक्तिमान बना देती है। उनकी याद अपने आप खिंचती है।

दिल में सही रूप से ज्ञान है, अच्छी तरह से दिल में मान लिया, पहचान लिया। आँखों से दिखाई नहीं पड़ता लेकिन दिल लग गई है। दिल से पहचान लिया है। तब तो समर्पण हुए हैं। दिल से याद करने से खुशी जमा होती जाती है। साकार बाबा के महावाक्य - बच्चे, और कुछ नहीं करो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हो तो खुशी जमा करते जाओ। खुशी जमा करने के लिए -दे दान तो छुटे ग्रहण। ग्रहण छुटेगा फिर क्या होगा। सूर्य की सकाश ले सकेंगे। सूर्य की सकाश कितना बड़ा काम करती है, वह सिर्फ रोशनी नहीं देती, लेकिन सागर से पानी खींच कर नमक को अलग कर देती है, बादल भरकर वर्षा कर देती है। तो सूर्य की सकाश, सूर्य की किरणें अन्दर के कूड़े किचड़े को खत्म कर देती हैं। इसलिए बाबा कहते, हे आत्मा परमात्मा को याद करो उससे कनेक्शन जोड़ो तो सकाश मिल जायेगी। रोशनी भी आ जायेगी, खुशी भी आ जायेगी।

अव्यक्त इशारे

यदि मन में कोई बात आती है तो बाबा को फ्रेंड के रूप में सुना दो

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

> मन को लक्ष्य दो। लक्ष्य एकदम पक्का हो-मुझे मन को विश्व कल्याण में बिजी रखना है। सर्वगुण सम्पन्न, बनना ही है।

वास्तव बाबा के साथ अगर अनुभव करते रहें तो उनके साथ से हमको शक्ति मिलेगी। जहाँ सूर्य होगा वहाँ प्रकाश होगा ही। बाबा साथ हैं तो बाबा की ताकत के वायब्रेशन मिलेंगे। ऐसे नहीं साकार में तो बाबा है ही नहीं, आता है स्टेज पर मुरली बजाकर चला जाता है, मिलने को भी नहीं मिलता है। लेकिन हमेशा साथ का अनुभव होना चाहिए क्योंकि बाबा अव्यक्त हुआ ही है बच्चों के पुरूषार्थ की गती को, सेवा को तीव्र करने के लिए। व्यक्त रूप में इतनी फास्ट सेवा नहीं कर सकते। अव्यक्त रूप में एक सेक ण्ड में वर्ल्ड का चक्कर लगा सकते हैं। इसलिए बाबा ने सिर्फ चोला और कमरा बदला है। व्यक्त से अव्यक्त बने और मधुबन से सूक्ष्म वतनवासी बने। लेकिन क्यों बने? हम बच्चों की पुरूषार्थ की गति को तीव्र करने के लिए। इसलिए मन में कोई बात आती है तो बाबा को फ्रेंड के रूप में सुना दो। जैसे दादी अपना अनुभव सुनाती हैं कि मन की जो भी बाते होती हैं वो बाबा से अमृतवेले कर लेती हूँ। इसलिए दादी सदा हर्षित रहती है। आप के मन में कोई भी बात आएगी तो चेहरा बदलेगा, चाल बदल जायेगी। इसलिए जरूरी है कि हम सदा बाबा के साथ का अनुभव करें, बस बाबा और मैं उनका बच्चा हूँ। बच्चे को कुछ भी होगा तो वह फौरन माँ-बाप के पास आएगा तो हम भी बच्चे हैं, हमारी जिम्मेवारी बाबा ने ली है। और बाबा कहता है मैं साथ देने के लिए ही आया हूँ। बाबा ऑफर करता है सिर्फ आप ऑफर स्वीकार कर उसका अनुभव करो। अनुभव कम करते हो, और-और बातों में मन बीजी हो जाता है। बाबा साथ है तो कोई भी बात हो बाबा को सुना दो और खुद निश्चिंत हो जाओ। चलो मैं कमजोर हूँ, ब्राह्मण जीवन के जो संस्कार है वो मर्ज हो जाते है। और पुराने स्वभाव-संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। तो संस्कार इमर्ज क्यों होते हैं? मन फ्री है तब तो उसको टाइम मिला न। जैसे जब कोई बीजी होता है तो आउट का बोर्ड लगा देता है। तो आउट का बार्ड लगा दो। अन्तमुखी माना देह के भान से आउट, फिर कोई आयेगा कैसे? अगर ऐसी स्थिति है तो साथ-साथ का अनुभव बहुत अच्छा होता है। लेकिन हमने मन को गुडियों के खेल में बिजी कर रखा है तो बाबा के साथ का अनुभव कैसे कर सकेगा? इसलिए बाबा कहते हैं पहले अपने मन को कंट्रोल करो। मनोबल को बढ़ाओ। मन में बल है, मन सर्वशक्तिमान है लेकिन वो शक्तियाँ यूज नहीं करते हो।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

सभी कहते हैं हम अष्ट शक्ति स्वरूप हैं, सर्व शक्तियां छोड़ो, आठ शक्तियाँ ईमर्ज रूप में हों तो क्या नहीं हो सकता! हमारे मन को एक ही काम मिला गया न। भले स्थूल में हम कुछ भी करें, मन को एक काम मिल गया कि मुझे मनोबल से विश्व का कल्याण करना है। एक ही काम उसको दो। यज्ञ से प्यार है इसलिए कर्मणा में भी मदद कर रहें हैं लेकिन मन का लक्ष्य क्या है? लक्ष्य तो यही है-बाबा का यज्ञ है, बाबा की सेवा है तो यहाँ जो भी आवे प्यार के,स्नेह के वायब्रेशन ले जाए।

भगवान का आश्रय ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है

योग समागम: राजयोग, भक्तियोग, हठयोग, मंत्रयोग एवं ज्ञानयोग का हुआ संगम

शिव आमंत्रण, जयपुर, राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के वैशाली नगर सबजोन द्वारा आयुष मंत्रालय भारत सरकार एवं जयपुर नगर निगम ग्रेटर के सहयोग से योग समागम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि गलता पीठाधीश्वर अवधेशाचार्य महाराज ने कहा कि योग साधक में समता और समत्व का भाव पैदा करता है। योग की जो भी विधाएं प्रचलित हैं, उसके मूल में यही बात रहनी चाहिए कि शरीर को स्वस्थ रखते हुए हम भगवान की कृपा के अधिकारी कैसे बनें? भगवान का आश्रय ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है।

नगर निगम ग्रेटर की महापौर सौम्या गुर्जर ने कहा कि योग का असली मकसद है आपस में सबको जोड़ना, व्यक्ति को ऊर्जा से, शहर से, स्वच्छता से, पर्यावरण से, बड़ों का सम्मान करने से, हमें विकसित भारत बनने में योगदान के लिए जोड़ना है। उन्होंने हर व्यक्ति को भारत मां के नाम एक वृक्ष लगाने का आह्वान किया।

राजस्थान प्रदेश क्रीड़ा भारती के संयोजक मेघसिंह चौहान ने कहा कि विपरीत परिस्थिति में न विचलित होना है तथा न ही खुशी के पल में ज्यादा खुश होना है, प्रभु चिंतन करते हुए आनंद में रहने से योग सफल हो सकता है। योगापीस संस्थान के संस्थापक योगाचार्य ढाकाराम ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास हो सकता है।

जगदुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रामसेवक दुबे ने कहा कि चित की साधना अर्थात अन्तकरण को स्वच्छ करते हुए शरीर को स्वस्थ रखना है। ब्रह्माकुमारीज़ की सबजोन प्रभारी राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने कहा कि हम स्त्री अथवा पुरुष नहीं हम सतचित आनंद स्वरुप आत्माएं हैं। अपने इसी स्वरुप की ज्योति जगाकर हमें एक-दूसरे के प्रति शुभ भावना रखते हुए प्राणीमात्र के प्रति रहम की भावना रखें। राजयोग ध्यान के माध्यम से सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई और अपने दैनिक जीवन में राजयोग को शामिल करने का आह्वान किया। सेवाकेंद्र प्रभारी चंद्रकला दीदी ने सभी को स्वयं के साथ परिवार, शहर, समाज की स्वच्छता, शुद्धता एवं पवित्रता के लिए प्रतिदिन योगदान देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम संयोजक बीके एकता बहन ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में एक दर्जन से अधिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आध्यात्मिक सशक्तिकरण से आएगा रामराज्य

शिव आमंत्रण, सिंगरौली, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के उपक्षेत्रीय मुख्यालय तपोवन कॉम्पलेक्स विंध्य नगर में स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज के निर्माण हेतु आध्यात्मिक सशक्तिकरण आवश्यक विषय पर पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके अवधेश दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता का अर्थ है आत्मा के मौलिक गुणों शान्ति, प्रेम, आनंद, पवित्रता और शक्ति को बढ़ाना और सर्व को एक परमपिता परमात्मा की सन्तान भाई-भाई समझना है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण के बिना स्वर्ग या रामराज्य केवल कल्पना ही है, उसे वास्तविकता में परिणित नहीं किया जा सकता। जो एनर्जी, शक्ति आत्मा के अध्ययन के लिए लगाई जाती है उसको ही अध्यात्मिक शक्ति बोलते हैं। जिंदगी में आने वाली पस्थितियों को सामना करने के लिए अध्यात्म मानसिक स्तर पर तो आपको मजबूत बनाता ही है। साथ ही शरीर के इम्यून सिस्टम को इंफेक्शन्स और वायरल बीमारियों से बचाने में भी सहायता करता है। अध्यात्म हमारे नर्वस सिस्टम पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। भोपाल से पधारीं बीके लीला बहन ने मंच संचालन किया। पोरसा से पधारीं बीके रेखा बहन ने भी विचार व्यक्त किए। क्षेत्रीय संचालिका बीके शोभा बहन ने राजयोग मेडिटेशन कराया। इस मौके पर बड़ी संख्या में शहर के मीडियाकर्मी मौजूद रहे।

राजयोग सेवाकेंद्र हेटौडा में मीडिया प्रभाग द्वारा सेमीनार आयोजित

पत्रकारिता के क्षेत्र में योगाभ्यास जरूरी : अध्यक्ष गौतम

शिव आमंत्रण, हेटौडा, नेपाल

ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग सेवाकेंद्र हेटौडा में मीडिया प्रभाग द्वारा होटल रॉयल पैलेस में स्वस्थ और खुशहाल समाज के लिए आध्यात्मिकता में मीडिया की भूमिका विषय पर मीडिया सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें शहर के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े पत्रकारों ने भाग लिया। नेपाल पत्रकार महासंघ मकवानपुर के अध्यक्ष मणिराज गौतम ने कहा कि मेरा अनुभव है कि पत्रकारिता के क्षेत्र में योगाभ्यास जरूरी है। रचनाएं तब तक सकारात्मक नहीं हो सकती हैं, जब तक मन स्थिर और शांत न हो। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान, व्यावहारिक और वैज्ञानिकता पर आधारित हैं। माउन्ट आबू से पधारे हुए मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी डॉ. शांतनु भाई ने कहा कि जंगल में छिपे मोर के नृत्य को आज समाज तक पहुंचाने का मीडिया बहुत महत्वपूर्ण काम कर रहा है। आज वास्तविकता यह है कि दूसरों का डांस दिखाते समय आपको ज्यादा परेशान नहीं होना पड़ता इसका प्रभाव मीडिया के क्षेत्र में होगा।

नेपाल के नारायणगढ़ क्षेत्र के मीडिया संयोजक वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके नवराज ने मीडिया द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किए गए अभियान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। बागमती प्रांत के प्रमुख यादव चन्द्र शर्मा ने इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की। क्षेत्रीय प्रमुख बीके सुशीला दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें लंबे समय से आत्माओं को परमात्मा का सत्य परिचय देने का लगातार प्रयास कर रही हैं और समय की पुकार सुनने का समय आ गया है। स्वागत भाषण बीके रेवती बहन ने दिया। बीके अर्जुन ने कर्मों की गहन गति पर प्रकाश डाला। संचालन बीके बिजय राज सीग्देल ने किया।

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री के प्रथम नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने मुलाकात की। बीके रमा बहन, बीके रीना बहन ने मंत्री का तिलक लगाकर, उपर्णा उढ़ाकर और गुलदस्ता भेंट कर सम्मान किया। नशामुक्ति अभियान के तहत की जा रही सेवाओं पर चर्चा की। बीके कल्पना, बीके सुमन बहन, भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष पुष्पेंद्र प्रताप सिंह,पूर्व नपाध्यक्ष अर्चना गुड्डू सिंह भी उपस्थित रहीं।

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र। प्रभु उपहार भवन माधौगंज में वैश्य महा सम्मलेन मप्र महिला इकाई जिला ग्वालियर महानगर के सदस्यों के लिए खुशनुमा जिन्दंगी विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश अग्रवाल, महामंत्री अनिल जैन, संभागीय अध्यक्ष महेश गर्ग, प्रभारी बीके आदर्श दीदी, बीके डॉ. गुरचरण सिंह, बीके प्रहलाद भाई ने संबोधित किया।

शिव आमंत्रण, वाशी नवी, मुंबई। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को लेकर नवी मुंबई महानगर पालिका की ओर से सिडको एक्जीबिशन सेंटर में कार्यक्रम किया गया। इसमें मंदाताई म्हात्रे, योगाचार्य हंसा योगेन्द्र, बीके शीला दीदी, गणेश नाईक, आईएएस विजय नहाटा,कमिश्नर कैलाश शिंदे मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन सभागार में डॉक्टर्स के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें स्वास्थ्य सेवा विभाग के क्षेत्रीय संचालक डॉ. संजय मिश्रा, डॉ. जेपी गौर, डॉ. दीपक साहू आईएमए प्रेसीडेंट अभिजित विरनोई, डॉ. अखिलेश गुमास्ता, डॉ. हेमलता, डॉ. मनीष मिश्रा सहित नगर के वरिष्ठ डॉक्टर मौजूद रहे। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का दैनिक जीवन में महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। बीके डॉ. श्याम भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के जोनल मुख्यालय ज्ञान शिखर में डॉक्टर्स सम्मान समारोह आयोजित किया गया। माउंट आबू से पधारे वरिष्ठ राजयोगी बीके राजू भाई ने डॉक्टर्स को दैनिक जीवन में राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए सम्मान किया। जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने भी संबोधित किया। इस मौके पर डॉ. एएल शर्मा, डॉ. संध्या शर्मा, डॉ. सीपी कोठारी, डॉ. शकुंतला कोठारी, डॉ. नीरज जैन, डॉ. मनीला जैन, डॉ. संजय देसाई, डॉ. शिल्पा देसाई, डॉ. विनीत कोठारी सहित अन्य डॉक्टर्स मौजूद रहे।

वैश्विक संस्कृति प्रेम-शांति-सद्भावना अभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ

ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है विश्व में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को फैलाने का सराहनीय कार्यः केंद्रीय मंत्री यादव

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी अभियान वैश्विक प्रेम-शांति-सद्भावना का राज्यस्तरीय शुभारंभ ओम शांति रिट्रीट सेंटर में भारत सरकार के केंद्रीय पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने किया।

उन्होंने कहा कि संस्था विश्व में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को फैलाने का सराहनीय कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें विश्व के हर कोने में प्रेम-शांति-सद्भावना की प्रेरणा दे रही हैं। शांति वास्तव में मन को दुखों से निवृत्त करने का नाम है। शांति अंदर से आती है, बाहर से नहीं। नैतिक मूल्यों के अनुपालन से ही सच्ची शांति आती है। परनिंदा, हिंसा, लोभ एवं स्वार्थ के त्याग से ही शांति की अनुभूति होती है। प्रेम-शांति-सद्भावना के भावों को कला एवं संस्कृति के माध्यम से सहजता से जगाया जा सकता है। ब्रह्माकुमारीज संस्था ये कार्य बखूबी कर रही है।

करनाल से निफा के अध्यक्ष प्रीतपाल सिंह पन्नू ने कहा कि निफा के सदस्य ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के साथ मिलकर सहयोग के लिए तैयार हैं। ताकि बेहतर ढंग से मूल्यों के प्रति समाज के हर व्यक्ति को जागृत किया जाए। संस्था के कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके चंद्रिका दीदी ने अभियान की जानकारी दी। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी, राष्ट्रीय संयोजिका बीके प्रेम, बीके पूनम, बीके भावना ने भी विचार रखे। एक गीत की भी लॉन्चिंग की गई। जिसे बीके चांद बजाज ने गाया।

वाराणसी, उप्र। सिक्किम के राज्यपाल लक्ष्मण आचार्य से ज्ञान चर्चा के बाद ईश्वरीय उपहार प्रदान करती हुई राजयोगिनी बीके सुरेंद्र दीदी, काशी विद्दत परिषद के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी, बीके राधिका बहन, बीके तापोशी बहन, बीके विपिन भाई व अन्य।

करनाल, हरियाणा। सामाजिक संस्था नेशनल इंटीग्रेटेड फ़ोरम ऑफ़ आर्टिस्ट्स एंड एक्टिविस्टस (निफा), हरियाणा रोडवेज़ ड्राइविंग स्कूल के सहयोग द्वारा ब्रह्माकुमारी सेक्टर-7 पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। संचालिका बीके प्रेम दीदी ने राजयोग के बारे में बताया।

चंडीगढ़। सेक्टर 46बी सेवाकेंद्र द्वारा मॉडल स्कूल, सीनियर सेकंडरी स्कूल व गवर्नमेंट स्कूल रामदरबार में कार्यक्रम आयोजित किया गया। बॉर्डर सिक्योरिटी फ़ोर्स के अतिरिक्त महानिदेशक हरेंद्र कुमार, प्रभारी बीके पूनम दीदी, बीके सुधीर ने बच्चों को मोटिवेट किया।

रोसड़ा (समस्तीपुर) बिहार। नवनिर्वाचित सांसद सह केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राज भूषण चौधरी को शुभकामनाएं देते हुए बीके कुंदन बहन। इस दौरान उन्होंने संस्था द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में केंद्रीय मंत्री को अवगत कराया।

नौगांव : पुलिसकर्मियों के लिए कार्यक्रम आयोजित

हमारे जीवन का आधार हमारा चिंतन है : नीतू दीदी

शिव आमंत्रण, नौगांव/छतरपुर, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा नौगांव थाना के पुलिसकर्मियों के लिए सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। घुवारा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीतू दीदी ने कहा कि हमारा जैसा चिंतन होगा वैसा जीवन होगा, हमारे जीवन का आधार हमारा चिंतन है।

बीके रीना दीदी ने कहा कि एक मूल्यनिष्ठ संसार की स्थापना करना ही संस्था का मुख्य लक्ष्य है, जिसके लिए संस्था पिछले 88 वर्षों से कार्य कर रही है। धैर्यता, मधुरता, नम्रता, पवित्रता जैसे मूल्य हमारा निजी खजाना हैं। शांत मन से ही सकारात्मक निर्णय लिए जा सकते हैं। सुरक्षाकर्मियों को अपने मन की सुरक्षा करना जरूरी है, तभी वह देश की रक्षा कर सकते हैं और इसके लिए राजयोग का अभ्यास कर अपने मन को सशक्त बनाएं। बीके मोहिनी दीदी ने एक एक्टीविटी कराई गई जिसके माध्यम से सभी के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। इस मौके पर नौगांव पुलिस थाना प्रभारी सतीश सिंह, गरौली चौकी प्रभारी नेहा गुर्जर एवं थाने से समस्त पुलिस स्टाफ मौजूद रहा। नौगांव रानी साहब माया सर्वानी ने कहा सारी दुनिया की सुरक्षा करने वाले स्वयं परमात्मा ने आज आप सभी सुरक्षाकर्मियों को यहां पर बुलाया हुआ है।

समस्या- समाधान

चित्त शांत हो जाए तो... समस्याएं शांत हो जाती हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बहुत सारी बातें सुनाकर कहा कि हे! अर्जुन तू योगी बन। योगी ही संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं। योगी तपस्वियों से भी श्रेष्ठ हैं। योग के बल से ही जीवन निर्विघ्न बनता है। यदि योग अच्छा नहीं होता तो जीवन में व्यर्थ रहता है और उससे समस्याएं और विघ्न आते हैं। यादि मन शांत नहीं रहता, सारा दिन व्यर्थ में लगा है तो बीमारियों में बढ़ोतरी हो जाती है। अगर चित्त शांत हो जाए तो समस्याएं भी शांत हो जाती हैं। हमारा योग अर्थात् परमपिता परमात्मा शिव बाबा से कनेक्शन सर्वशक्तिमान से संबंध है। योगी जीवन बनाने के लिए यदि सवेरे हमारा योग बहुत अच्छा होगा तो सारा दिन हम योगयुक्त और अंतर्मुखी होंगे। सवेरे हमारा अमृतवेला का योग बहुत अच्छा होगा। इन दोनों का बहुत गहरा कनेक्शन है।

कैसे हम अपने जीवन को महान योगी जीवन बनाएं, इसके लिए पांच बातें महत्वपूर्ण हैं....

पहला ज्ञान का बल, दूसरा पवित्रता का बल, तीसरा है त्याग का बल क्योंकि त्याग के बिना तपस्या नहीं होती, चौथा है कर्मेन्द्रियों के रसों से मुक्त, पांचवा है समर्पण भाव। साक्षीभाव भी बहुत बड़ी स्थिति है। पर उसे हम ज्ञान के बल में लेंगे। इन पांच बातों पर हमें बहुत ध्यान देना है। ज्ञान का बल बहुत बड़ी चीज बाबा ने हमें आकर दी है। मुरली के माध्यम से बाबा हममें रोज ज्ञान का बल भरते हैं। ड्रामा का ज्ञान बहुत सुन्दर है। ड्रामा को समझने से हमारी बहुत सी बातें क्लीयर हो जाती हैं, जो कुछ इस ड्रामा में हो रहा है वही सत्य है। ड्रामा में सब अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए यहां किसी का कोई दोष नहीं है। गुह्यता से इस बात पर विचार करेंगे तो चित्त शांत होगा। ऐसी बहुत सारी बातें हैं जिसको हम चिंतन में लाएंगे तो ड्रामा के ज्ञान का बल हमें योगयुक्त बनाने में बहुत बड़ी मदद करेगा। एकरस स्थिति तब तक नहीं हो सकती जब तक कर्मेन्द्रियों का रस है। इसलिए इससे मुक्त हो जाएं। कर्म के प्रभाव से मुक्त और कर्म के परिणाम के प्रभाव से मुक्त हो जाएंगे तो कर्मातीत अवस्था हो जाएगी। यह होगा समर्पण भाव से। मन, बुद्धि और संस्कार के सम्पूर्ण समर्पण से। जो भी मन में संकल्प चलता है उसे भी बाबा को समर्पण कर दें। बुद्धि जो निर्णय करे वो भी बाबा को समर्पित कर दें। ज्ञान की वृद्धि से विवेक बढ़ता और निर्णय करने की शक्ति बढ़ती है। कर्म जो करें उसे बाबा के लिए करें कि मेरा हर कर्म तेरे लिए है। तो सबकुछ बाबा सम्हालेगा। मेरा जीवन भी तुम्हारे हाथों में, मेरा शरीर भी तुम्हारे हाथों में, मेरा सबकुछ तुमको अर्पित।

समर्पित भाव से जीवन जीना तो जीवन सहज हो जाएगा

मैंने कोई सेवा भी की तो वो तुमको अर्पित। समर्पित भाव से जीवन जीना तो ये जीवन सहज हो जाएगा। अपने जीवन में पांच स्वरूपों के अभ्यास पर जोर दें। एक भाई का अनुभव है कि एक दिन में अगर 21 बार पांच स्वरूपों का अभ्यास करते हुए सोचें कि मेरा जीवन पूरा व्यर्थ से मुक्त है तो पूरा ही मुक्त हो जाएगा। ये पांच स्वरूप हमारे लिए एक वरदान हैं, जो हमें सहज ही पांच स्वरूपों के ज्ञान, गुण व शक्तियों को स्वयं में ले आता है। इससे सहज ही योगी जीवन बनाया जा सकता है।

रोजाना मुरली सुनने से भरेगा ज्ञान का बल....

- मुरली से हमें ज्ञान का बल मिलता है और विचार महान होते हैं।
- यदि किसी के विचार महान नहीं हैं। हद के विचार हैं, तो उसकी योगयुक्त स्थिति नहीं होती है।
- इसमें बाबा हमें स्मृतियां दिलाते हैं तुम तो मेरे जैसे ही हो, तुम मेरे हो, तुम महान हो। तुम वही हो जिसकी मंदिरों में पूजा हो रही है... ये ज्ञान, महान विचार देने वाला वही है जिसे हमने दर-दर तलाशा।
- मन ही मन बाबा से बातें करो, बाबा की मुरली की महिमा करो। सूक्ष्म रूप से, गुप्त रूप से तुम इस तरह से हमें आकर पढ़ाओगे।
- मुरली के माध्यम से भगवान आत्माओं से बात करता है। भगवान किसी से बात करे, उसका सुख कितना जबरजस्त होगा।
- भगवान ने हमें सम्मान दिया, हमारे खोए हुए आत्मसम्मान को जगा दिया।
- मुरली से बाबा का प्यार मिलेगा। ज्ञान के प्वाइन्टस का बल हमें योगयुक्त बनाने में बहुत मदद करेगा।
- मुरलियों से हमारे पास महान विचारों का भंडार भरा हुआ है। सेवाएं कैसे बढ़ेंगी, आत्माओं का कल्याण कैसे करोगे। प्रकृति को कन्ट्रोल कैसे करोगे।
- रोजाना सेंटर पर नियमित समय पर जाकर ही मुरली सुनें।
- घर पर व टीवी पर मुरली नहीं सुनें।
- मुरली कभी मिस नहीं करना है। मुरली पढने वालों को याद नहीं रहता। खुद मुरली पढ़ लेना इतना महत्वपूर्ण नहीं है।

ओम शांति रिट्रीट सेंटर में विशेष कार्यक्रम आयोजित

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था विश्व बंधुत्व के लिए महान कार्य कर रही है: केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ महिलाओं द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। उक्त विचार कॉरपोरेट मामलों और भारत सरकार सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में एक विशेष कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि संस्था विश्व बंधुत्व के लिए महान कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री जी सबका साथ, सबका विकास एवं सबका प्रयास लेकर चल रहे हैं। वास्तव में भारत देश ही विश्व गुरु की पदवी के लायक है।

उन्होने कहा कि ओआरसी में आने से शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा का आभास हुआ। राजनीतिक जीवन में होते हुए भी सामाजिक सरोकार का ध्यान रहता है। जिसका असली कारण उनका राष्ट्रीय स्वयं संघ से जुड़े होना है।

माउंट आबू से पधारीं संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी सुदेश दीदी ने कहा कि हम सब आत्माएं एक परमात्मा की संतान होने के नाते आपस में भाई-भाई हैं। आत्मा के स्वधर्म में स्थित होने से ही हम धार्मिक एवं भाषा के भेदभाव से ऊपर उठ सकते हैं। भारत में दैवी संस्कृति थी। जिसे हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के नाम से जानते हैं। लेकिन आज के युग में वो संस्कृति प्रायः लोप हो गई है। इसलिए कलियुग अंत में परमपिता परमात्मा शिव पुनः अवतरित हो उस आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं।

कार्यक्रम में संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन एवं ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने भी अपने विचार रखे। संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित अनेक सदस्य मौजूद थे। संचालन बीके हुसैन ने किया।

शिव आमंत्रण, सादाबाद, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ शाखा द्वारा स्वच्छ और स्वस्थ समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें संत स्वामी सदानंद महाराज, बीके भावना दीदी, महेन्द्र सिंह आचार्य, उमेश प्रधान सरोठ, रनवीर सिंह, श्यामवीर सिंह चौधरी, स्थानीय प्रभारी बीके मिथलेश दीदी मौजूद रहीं।

काठमांडू, नेपाल। राजयोग सेवाकेंद्र भक्तपुर-दुवाकोट द्वारा पारिवारिक मानसिक शांति, खुशी और सामाजिक समृद्धि के लिए सकारात्मक सोच और रचनात्मक जीवन शैली प्रवचन गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें डिस्टिक ऑफीसर रोशनी श्रेष्ठ, बीके किरण दीदी, बीके विजय, बीके रामसिंह ने संबोधित किया।

समाज सेवा प्रभाग: मानसरोवर में भट्टी और ट्रेनिंग आयोजित

सेवा से दूसरों को खुशी देंगे तो खुशी मिलेगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के मान सरोवर परिसर में समाज सेवा प्रभाग का योग तपस्या शिविर और ट्रेनिंग आयोजित की गई। इसमें देशभर से 450 से अधिक बीके भाई-बहनों ने भाग लिया।

ट्रेनिंग में संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके सुदेश दीदी ने कहा कि भट्टी अर्थात अपने आप को अग्नि में तपाना क्योंकि अग्नि कभी भी मैली नहीं होती, बल्कि वह निखारती है, अपने जीवन से दूसरों का जीवन बनाने की यह ईश्वरीय भट्टी है। आप समाजसेवियों द्वारा समाज की सभी समस्याएं खत्म हो जाएं ऐसी भट्टी अर्थात तपस्या करके यहां से जाना है। परमात्मा हमें सुख-शांति, पवित्रता के रंग में रंग रहा है, इसलिए परमात्मा के प्यार का रंग कभी भी नहीं उतरता है।

संयुक्त मुख्य प्रशासिका व समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने

कहा कि मम्मा हमेशा हमें इस बात को याद करवाती थी कि करन करावनहार करवा रहा है, हम सभी निमित हैं। यह ईश्वरीय सेवाएं सुखद सेवाएं हैं। सेवा जितनी हम दूसरों की सुख देने के लिए करते हैं उतनी हमें खुशी मिलती है और आगे बढ़ते हैं। सेवा करते हुए मैं पन ना आए और सेवा निस्वार्थ भाव से हो। नडियाद की बीके पूर्णिमा दीदी ने मम्मा-बाबा के साथ के अनुभव सुनाते हुए कहा कि यज्ञ द्वारा जो भी साहित्य लिखा गया है उसको जितना हम पढ़ेंगे और मनन-चिंतन करेंगे उससे हमारी स्थिति श्रेष्ठ होगी।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई, डॉ. सविता दीदी, बीके गोपी दीदी, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, बीके राजू भाई, मोटिवेशनल स्पीकर गिरीश भाई, मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई, बीके अंकिता बहन ने भी संबोधित किया।

नवनिर्मित सेवाकेंद्र अजिरमा का उद्घाटन

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित सेवाकेंद्र अजिरमा का उद्घाटन महिला एवं बाल विकास विभाग कैबीनेट मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, सांसद चिंतामणि महाराज, विधायक माननीय उद्धेश्वरी, जोन निर्देशिका बीके हेमलता दीदी, भिलाई की निदेशिका बीके आशा दीदी, रायपुर की निदेशिका बीके सविता दीदी, सरभुजा क्षेत्र की निदेशिका बीके विद्या दीदी ने रिबन काटकर किया।

केंद्रीय शहरी विकास राज्यमंत्री से मुलाकात

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। केंद्रीय शहरी विकास राज्य मंत्री तोखन साहू को शुभम बिहार कॉलोनी सेवाकेंद्र संचालिका बीके सविता दीदी, बीके भारती दीदी ने ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया और संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया।

दिव्यांग सेवा अभियान पहुंचा सिरसा

शिव आमंत्रण, सिरसा, हरियाणा। दिव्यांग सेवा प्रभाग द्वारा विशेष बच्चों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए पूरे भारत में अभियान चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत अभियान के पंचकुला से सिरसा पहुंचने पर आनंद सरोवर सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें प्रभाग के प्रमुख बीके सूर्यमणि भाई, वृंदावन से गौवत्स आचार्य सत्यदेवानन्द महाराज, मण्डलीय बाल कल्याण अधिकारी कमलेश चाहर, प्रभारी बीके बिन्दू दीदी ने संबोधित किया।

सात दिवसीय योग तपस्या शिविर आयोजित

शिव आमंत्रण, अटलादरा, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ अटलादरा सेवाकेंद्र पर मुख्यालय माउंट आबू से पधारे वरिष्ठ राजयोगी बीके राजू भाई ने सात दिवसीय साइलेंस अनुभूति योग तपस्या शिविर का शुभारंभ किया गया। इस दौरान बारोट के डिप्टी मेयर चिराग भाई, गेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सीजीएम अरुण कुमार मोदी, जायडेक्स इंडस्ट्री के डायरेक्टर अजय भाई रांका, आर्किटेक्ट भरता केतन भाई शाह ने भी भाग लिया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-
वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए ▶ तीन वर्ष 450 रुपए
▶ आजीवन 3500 रुपए
मो ▶ 9414172596, 8521095678
Website ▶ www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता
संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 8538970910, 9179018078
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

For online transfer
A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960
Scan To Pay

विश्वभर में मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती का 59वां पुण्य स्मृति दिवस मनाया

मम्मा ने अपने श्रेष्ठ कर्मों से आदर्श प्रस्तुत किया

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) का 59वां पुण्य स्मृति दिवस संस्थान के विश्वभर में स्थित सेवाकेंद्रों पर मनाया गया। मुख्यालय शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में आठ हजार लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस मौके पर मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी सहित सभी वरिष्ठ भाई-बहनें मौजूद रहे।

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) ने हम सभी को जीवन ऊंचा बनाने के लिए श्रेष्ठ धारणाएं सिखाईं। सभी को गाइड किया और ज्ञान का स्वरूप बनकर आदर्श प्रस्तुत किया। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन ने कहा कि मम्मा के जीवन में लव एंड लॉ का बैलेंस था। कम उम्र की होने के बाद भी आपका व्यक्तित्व इतना विशाल था कि सभी को मां की अनुभूति होती थी। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में शुरुआत में अनेक परीक्षाएं आईं लेकिन आपने अपने गंभीर स्वभाव और धैर्यता से सभी का सामना किया। मम्मा ने शुरुआत से लेकर अपने जीवन के अँतिम क्षण तक पूरे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का संचालन कुशलता पूर्वक एक मां के समान किया। वरिष्ठ राजयोगी बीके आत्मप्रकाश भाई ने कहा कि मुझे मम्मा के साथ बहुत कुछ सीखने को मिला। उनकी कर्मातीत अवस्था आज भी हम सभी के लिए उदाहरण है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा दीदी ने कहा कि मम्मा का जीवन हम ब्रह्मा वत्सों के लिए प्रेरणादायी, पथप्रदर्शक और ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिए एक मिसाल है। मम्मा ने अल्पायु में ही कठिन योग साधना से संपूर्णता की स्थिति बना ली थी। आज आपके बताए मार्ग पर चलकर लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहन अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के मार्ग पर अग्रसर हैं।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। पुलिस विभाग द्वारा नवीन कानून - दंड संहिता से न्याय संहिता की ओर कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें राजयोग भवन की सेवाकेन्द्र संचालिका बीके स्वाति दीदी, टिगरापारा की संचालिका बीके मंजू दीदी व भाई-बहनों ने भाग लिया।

शिव आमंत्रण, राजकोट, गुजरात। राजकोट शास्त्री नगर सेवाकेंद्र पर 108 घंटे की विशेष योग तपस्या शिविर आयोजित किया गया। इसमें एक हजार से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। से दक्षा बहन की याद प्यार स्वीकारना जी। इस दौरान क्रिएटिव मेडिटेशन कराया गया।

शिव आमंत्रण, करनाल, हरियाणा। मुख्यमंत्री नायब सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के परिसर में पौधारोपण कर संस्था द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं की सराहना की। इस दौरान बीके भाई-बहनों ने भी पौधारोपण कर सुरक्षा का संकल्प किया।

शिव आमंत्रण, राउरकेला, ओडिशा। कुआरमुंडा जामा मस्जिद में मुस्लिम समाज जन को नशा मुक्त भारत अभियान के तहत बीके राजीव ने नशा छोड़ने का संदेश देते हुए संकल्प कराया। इस दौरान मौलाना इक़बाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

दिल्ली में साइबर सिक्योरिटी और जागरुकता कार्यशाला आयोजित

पॉजीटिव ऊर्जा करती है सत्कर्म के लिए प्रेरित

शिव आमंत्रण, दिल्ली

भारत सरकार की टेलीकॉम रेगुलेटरी ऑथोरिटी, ब्रह्माकुमारीज़ संस्था एवं फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन के संयुक्त तत्वावधान में साइबर अपराध की रोकथाम के लिए साइबर सिक्योरिटी विषय पर ईस्ट पटेल नगर राजयोग ध्यान केंद्र पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें टेलीकॉम रेगुलेटरी ऑथोरिटी के प्रिंसिपल एडवाइजर महिंद्रा श्रीवास्तव ने बताया कि मोबाइल गुम होने पर कैसे उसकी शिकायत करें। साथ ही उपस्थित लोगों के सवालों के जवाब भी दिए और उपभोक्ताओं की अनेक शंकाएं दूर की।

भारत विकास परिषद के सामाजिक सेवा एक्टिविस्ट गोयल भाई, माउंट आबू से पधारे रेडियो मधुबन के आरजे बीके रमेश भाई, रियल टाइम फ्री एजुकेटर संस्था के प्रभारी गीता सारधा और क्वीन विमेंस समाजसेवी संस्था की प्रेसिडेंट नेहा अग्रवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सेवाकेंद्र प्रभारी बीके राजश्री बहन ने साइबर क्राइम की रोकथाम में अध्यात्म का योगदान विषय पर कहा कि अंतरात्मा की नेगेटिव ऊर्जा हमेशा व्यक्ति को क्राइम करने के लिए प्रेरित करती है। आत्मा की पॉजीटिव ऊर्जा उसे सत्कर्म के लिए प्रेरित करती है। इसलिए मेडिटेशन द्वारा लोग अपने में पर्याप्त पॉजीटिव शक्ति को विकसित करें, ताकि लोग साइबर क्राइम न करने की अथवा ऐसी अपराध का शिकार न होने की सही सूझबूझ और आत्मबोध प्राप्त करें।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

ज्ञान की मणि बन सारे जग को किया प्रकाशित

(ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 17वें पुण्यतिथि पर विशेष। (अव्यक्त आरोहण : 25 अगस्त 2007)

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान। दादी प्रकाशमणि नारी शक्ति का वह प्रदीप्तमान सितारा थीं जिनके ज्ञान के प्रकाश की रोशनी आज भी अध्यात्म के पथिकों की राह प्रशस्त कर रही है। आपके हृदय की गहराई और विशालता कितनी महान रही होगी जो हर किसी को यही अनुभव और एहसास होता था- मेरी दादी मां। जहां एक ओर परिवारों में दो-चार लोगों को संतुष्ट कर पाना संभव नहीं होता है, वहीं दादी के अथाह प्यार, पालना, अपनापन और उदारता की महानता ही है कि हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों की संरक्षक, मार्गदर्शक बनकर सदा आगे बढ़ती गईं और ब्रह्माकुमारीज़ को विश्व क्षितिज पर स्थापित कर दिया। करुणा, सद्भावना और दया का सागर दादी मां का हृदय वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से भरपूर था। कुमारों की प्रेरक बनने से आपको प्यार से कुमारका दादी भी कहते थे। जिस विश्वास, आशा और उम्मीद के साथ ब्रह्मा बाबा ने दादी को 1969 में इस ईश्वरीय परिवार की कमान सौंपी थी दादी ने उससे हजार गुना उम्मीद पर खरा उतरते हुए परमात्म के दिव्य कार्य को न केवल आगे बढ़ाया, बल्कि लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के हृदय में निश्चल स्नेह-प्यार की मूरत बनकर सदा-सदा के लिए बस गईं। आपका जीवन नारी के शक्ति स्वरूप की जीती जागती मिसाल था। आपने दिव्य कर्म और विराट सोच से यह साबित कर दिखाया है कि यदि लक्ष्य पवित्र, महान और परमात्म साथ हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। इतने महान लक्ष्य दो-पांच वर्षों में हासिल नहीं किए जा सकते हैं। योग-तपस्या के पथ पर चलते हुए आपने न केवल अपना जीवन तपस्यामय बनाया बल्कि हजारों लोगों के लिए आदर्शमूर्त, उदाहरणमूर्त बनकर दिलों में ऐसी अमिट छाप छोड़ी जिसे मिटा पाना कभी संभव नहीं है।

आपके जीवन की शिक्षाएं जो आज भी ब्रह्मा वत्सों का मार्ग प्रशस्त करती हैं-

निमित्त भाव: जब व्यक्ति जीवन में कुछ अर्जित कर लेता है, किसी मुकाम पर पहुंच जाता है, प्रसिद्धि पा लेता है और किसी भी रूप में शक्तिशाली हो जाता है तो उसे ज्ञान, पैसे, शरीर या नाम का अहं भाव प्रकट होने लगता है। लेकिन दादी प्रकाशमणि हजारों बहनों की नायिका और इतने बड़े अंतरराष्ट्रीय संगठन की मुखिया होने के बाद भी जीवन में कभी अहं भाव छू तक नहीं सका। दादी सदा कहती थीं- मैं तो निमित्त मात्र हूं। करन-करावनहार परमात्मा पिता करा रहा है। मैं खुद को हैड मानती ही नहीं, हैड मानने से हेडक होती है।

निर्माण भाव: निर्माणता, महानता की निशानी है। जीवन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी, पद होते हुए चीजों को साक्षी भाव से देखना, विशाल व्यक्तित्व की पहचान है। खुद को पीछे रखकर दूसरों को आगे बढ़ाना, हिम्मत और उत्साह बढ़ाना दादी की खासियत थी।

निर्मल वाणी: वाणी मनुष्य का आभूषण होती है। निर्मल वाणी की धनीं दादी के बोल लाखों लोगों में उमंग-उत्साह और नई ऊर्जा का संचार कर देते थे। दादी की एक आवाज पर लाखों लोग चल पड़ते थे। जीवन पर्यंत ब्रह्माकुमारीज़ की मुखिया होने के वाबजूद आपके मुख से कभी कटु, कठोर और कड़वे वचन नहीं निकले। सदा सभी के प्रति शुभभावना, शुभकामना और प्रेम के बोल ही निकलते थे।

पवित्रता: पवित्रता ही महानता का आधार है। पवित्र आत्माएं प्रभु को प्रिय हैं। मन-वचन-कर्म से संपूर्ण पवित्रता से ओतप्रोत दादी मां सबके के लिए नजीर थीं। आपका आभामंडल इतना पावरफुल था कि संपर्क में आने वाले लोगों को पवित्रता की तरंगें महसूस होती थीं।

सादगी: इतना बड़ा ईश्वरीय कारोबार संभालते हुए भी सादगी आपके जीवन का श्रृंगार रहा। पूरा जीवन सादा खानपान, सादा रहन-सहन से युक्त रहा। सादगी की मूरत दादी हर किसी के दिल को जीत लेती थीं।

आत्मिक प्यार: छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर दादी के हृदय में सभी के लिए एकसमान प्यार और अपनेपन का भाव रहता था। उन्होंने कभी भी छोटे-बड़ों में भेद नहीं किया। हर एक भाई-बहन को अपनेपन का एहसास कराया। उन्हें आत्मिक प्यार दिया, यही कारण है कि आप सबकी चहेती दादी मां बन गईं।

संतुष्टता: हमें जीवन में जो मिला है उसमें खुद संतुष्ट रहना और दूसरों को संतुष्ट करना यह आपके जीवन में विशेष गुण रहा। किसी समस्या, परेशानी को लेकर जब भी कोई भाई-बहन दादी के पास जाता तो वह उनका समाधान देकर हर एक को संतुष्ट कर देती थीं। दादी से मिलने के बाद किसी के मन में कोई समस्या नहीं रह जाती थी।

स्वमान: परमात्म की शिक्षा है-सदा स्वमान में रहना और सर्व को सम्मान देना। स्वमान में रहेंगे तो सर्व का मान मिलेगा। सदा आत्मिक स्वमान में रहकर निरंतर परमात्मा को याद करना आपकी दिनचर्या में शामिल था।

सर्व को सम्मान: ईश्वरीय परिवार में सैकड़ों भाई-बहनों के अनुभव हैं कि कैसे दादी का व्यवहार सदा सर्व के प्रति सम्मान का रहा। कैसे उन्होंने सभी को सम्मान दिया। दूसरों को सम्मान देंगे तो हमें सम्मान मिलेगा। यह महावाक्य दादी के जीवन में यथार्थ रूप में चरितार्थ होता था। ऐसे दिव्य गुणों, विशेषताओं से संपन्न थीं हमारी दादी मां।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जितना हम झुकेंगे, उतने ही शक्तिशाली बनेंगे

अपनों के सामने हार मानना आपकी बड़ी जीत है

शिव आमंत्रण, आबू रोड। अपनों के सामने हार मानना, आपकी बड़ी जीत है। इससे रिश्ते मजबूत होते हैं। ये जीवन में जरूरी भी है। दिन में एक-दो बार झुक जाएं। बातों को बढ़ाने की जगह खत्म करना सीखें। जितना हम झुकेंगे, उतने ही शक्तिशाली बनेंगे। आज का समय स्क्रीन का है। परिवार के सामने कम और वॉट्सएप-फेसबुक पर ज्यादा बात करते हैं। बर्थडे भी सोशल साइट पर विश करते हैं। स्क्रीन जरूरी है लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है रियल लाइफ। रिश्ते बातों से नहीं वाइब्रेशन से चलते हैं। हम क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, उससे रिश्ते बनते हैं। परिवार में किसी बच्चे को अंधेरे से डर लगता है तो बार-बार उसकी कमजोरी सामने नहीं लाएं। दूसरों से तुलना नहीं करें। मनोबल और ताकत बढ़ाएं।

दूसरे के विचार गलत नहीं, मेरे से अलग हैं

हम जैसा चाहते हैं, वैसा दूसरे करें, यह अपेक्षा ही दु:ख का कारण है। सबकी अपनी सोच है, नजरिया है। हम जो चाहते हैं ठीक वैसा ही हो, ऐसा बिल्कुल जरूरी भी नहीं है। हम अक्सर एक-दूसरे के विचारों को गलत ठहराते हैं। हमको सोचना चाहिए कि सामने वाले की सोच और नजरिया गलत नहीं है। बस हमसे अलग है। उसको उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। इससे रिश्तों में अपनापन होगा। समान बढ़ेगा।

सोचना शुरू करें मैं परिवार का फरिश्ता हूं

योग करें और आज से ही यह सोचना शुरू कर दें कि मैं पवित्र आत्मा हूं। अपने परिवार का फरिश्ता हूं। परिवार की समस्याओं को मुझे ही सुलझाना है। परिजन से जब भी बात करें, सकारात्मक ऊर्जा भरें। किसी की कमियां नहीं दिखाएं। अन्य से तुलना नहीं करें।

बाहरी चीजों पर नियंत्रण नहीं है, मन पर रखें

बाहर की परिस्थितियां कैसी हैं, उन्हें किस तरह से लेना है, यह हमें तय करना होगा। हमें अपनों और दूसरों के सामने अपनी राय जरूर रखना चाहिए। कोई राय नहीं माने तो दु:खी या नाराज नहीं हों। किसी दूसरे का रिएक्शन हमारे मन की स्थिति को नहीं बदले। मन को हमेशा शांत रखें।

घर के खाने को प्रसाद, पानी को अमृत समझें

घर का बना खाना खाएं। इसे भगवान का स्मरण करते हुए बनाएं। इससे यही खाना प्रसाद और पानी अमृत बन जाएगा। भोजन करते वक्त निगेटिव बात का जिक्र नहीं करें। परमात्मा को याद कर भोजन करें। टीवी और मोबाइल नहीं देखें।

अपनी राय जरूर रखें, कोई माने या नहीं, यह उस पर निर्भर

यह दृढ़ संकल्प लें कि हमें जीवन में परिवर्तन करना ही है। यह संकल्प दोहराते रहें, इससे जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन जरूर आएगा। बाहर की परिस्थितियां कैसी हैं, उन्हें हमें किस तरह से लेना है, यह हमें तय करना होगा। हमें जीवन में हमेशा अपनों और दूसरों के सामने अपनी राय जरूर रखना चाहिए। सामने वाला उसे मानेगा या नहीं, यह उस पर निर्भर है। लेकिन सही राय जरूर रखना चाहिए, उसे बंद नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए बहुत लोगों को फूल अच्छे लगते हैं, लेकिन हो सकता है कुछेक को अच्छे नहीं लगें। इससे वे लोग गलत नहीं हो गए। फर्क नजरिए और सोच का है। बात परिवार की करें तो हम अक्सर बच्चों को अपने जैसा या फिर जैसा हम चाहते हैं वो बनाना चाहते हैं। एक समय तक जैसा आप चाहते हैं, वैसा होता भी है। लेकिन जब वह बच्चा बड़ा होता है तब हमारी बात नहीं माने तो हम नाराज हो जाते हैं। बाद में जेनरेशन गेप को जिमेदार ठहराते हैं। बिलकुल ऐसा भी नहीं है। आप सही हैं, लेकिन सामने वाला गलत है, यह ठीक नहीं है।

बिना कारण जाने निवारण संभव नहीं

संस्कारों की अहमियत बताते हुए उन्होंने कहा कि एक मिनट का साइलेंस रखते हैं और फिर अपने घर चलते हैं। अपने रिश्तों को देखते हैं। वे रिश्ते जो प्यार, समान और खुशी देते हैं। हमारे जीवन जीने का लक्ष्य है। उनको जब आंख बंद करके देखते हैं तो कौनसी छोटी-छोटी बातें हमें नजर आती हैं। जो रिश्ते सहज-सरल थे वे आज क्यों तनाव का कारण बन गए हैं। इसका कारण है हमें एक-दूसरे की बात समझ नहीं आती, छोटी-छोटी बात पर गलत फहमियां शुरू हो जाती हैं। इसका हल है कि हम स्वीकार करना सीखें।

शिक्षा से जुड़ने की जगह शिक्षक से जुड़े

परमात्मा को ही गुरु मानें। हम भगवान का दर्जा मानव को देते हैं जो गलत है। हर धर्म की स्थापना एक ही है। शिक्षक एकता का मैसेज देने आए थे, लेकिन उनकी शिक्षा की जगह लोग शिक्षक से जुड़ गए। अगर शिक्षा से जुड़ते तो हम सब एक होते और कोई लड़ाई नहीं होती। सब अपने धर्म को बड़ा बताने में जुटे हुए हैं।

इच्छाएं नहीं बनने देतीं अच्छा

इच्छाएं हमें अच्छा नहीं बनने देती हैं। 30 साल पहले संतुष्ट थे। पहले सादगी थी पर ताकत थी। लेकिन संतुष्टता बढ़ने की जगह घट गई है। संतुष्टता बाहर नहीं अंदर है। अगर आपमें सुकून है तो ही कामयाबी है। हर आत्मा को सिर्फ खुशी चाहिए। इच्छाएं बढ़ती गईं तो समाज ने संस्कारों का शोषण शुरू कर दिया। परमात्मा से कनेक्शन जोडना है तो आत्मा को हल्की करना होगा। आपके पास खुशी होगी तो ही दूसरों को दे पाओगे। धन कमाने से खुशी नहीं आती। हमारी आज की समस्याओं के समाधान के लिए हम सबको अपने मन और संस्कार को परिवर्तित करना होगा। कोई भी बड़ा कार्य सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो पाता है। अब संस्कारों में भी नंबर-1 बनना है। इसके लिए मन को सुंदर बनाएं। हर मन स्वच्छ हो इसकी शुरुआत करें। यही हमारा नया प्रोजेक्ट होना चाहिए। स्वच्छता सही मायने में तभी आएगी जब मन भी स्वच्छ होगा। हर व्यक्ति मन को स्वच्छ करे।

दिन की शुरुआत हो अच्छी...

हर रोज एक-दूसरे को सुख और प्यार दें। सुबह का समय सारे दिन को तय करता है इसलिए दिन की शुरुआत अच्छी हो। जो सुनते, पढ़ते और देखते हैं, वह हम बनते हैं। इसलिए पांच विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार को त्यागें। अहंकार नरक का द्वार है। सृष्टि को स्वर्ग बनाना है तो यह पांच विकार छोडना होंगे। समाज से हिंसा हटाना है तो चित्त से हर किसी को क्रोध हटाना होगा। ब्रह्मांड में नेगेटिव तरंग ही परेशानी का कारण है। एक-दूसरों को समान दें। अच्छा बोलें। अच्छा करें। एक-दूसरे की मदद करें।

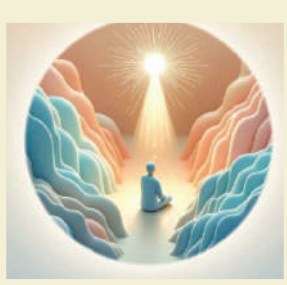

मम्मा के जीवन पर नाटक का मंचन

शिव आमंत्रण, सिलिकॉन वैली, मिलपिटास, यूएसए। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर बच्चों ने उनके जीवन पर आधारित नाटक का मंचन किया। इस मौके पर अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी, राजयोगिनी जयंती दीदी, राजयोगिनी कुसुम दीदी विशेष रूप से मौजूद रहीं।

मॉस्को में मनाया योग दिवस

शिव आमंत्रण, मॉस्को, रूस। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर समय की पुकार-राजयोग विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका सुधा दीदी ने संबंधित विषय पर संबोधित किया। इसमें भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक सुश्री मधुरकंचन रॉय विशेष रूप से मौजूद रहे।

खुशहाल-समृद्ध परिवार, ईश्वर की कृति

शिव आमंत्रण, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस। लाइट हाउस सेवाकेंद्र पर खुशहाल, शुद्ध, समृद्ध परिवार: ईश्वर की उत्कृष्ट कृति अभियान के तहत परिवार में दोहरे प्रकाश का माहौल बनाने की कला विषय पर तीन दिवसीय संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली से पहुंची डायनेमिक माइंड्स ग्रुप की सीईओ बीके अदिति, मुंबई से ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस स्टडीज के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सदस्य बीके नितिन बेरी, डॉ. वैलेंटिना सुलोयेवा ने संबोधित किया। निदेशिका बीके संतोष दीदी ने आशीर्वचन दिए।

नवनिर्मित मेडिटेशन सेंटर का उद्घाटन

शिव आमंत्रण, सिलिकॉन वैली, मिलपिटास। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित राजयोग मेडिटेशन सेंटर का उद्घाटन अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने किया। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बालिकाओं ने सुंदर प्रस्तुति दी। सेवाकेंद्र संचालिका बीके कुसुम दीदी ने सभी का स्वागत किया। अब यहां से लोगों को राजयोग ध्यान और अध्यात्म की शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 July. 2024
» प्रकाशक व मुद्रक: करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादक: ब्र.कु. कोमल » संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र